ऋतुगंध

डॉ. सूरज मृदुल



ऋतुगन्ध

(कविता-संग्रह)

ऋतुगन्ध

डॉ. सूरज मृदुल

चन्द्रमुखी प्रकाशन
दिल्ली-53

ISBN : 81-86625-37-2

प्रकाशक : **चन्द्रमुखी प्रकाशन**
डी-4, जगजीवन राम गली
जगजीत नगर, दिल्ली-110053
फोन : 22185874

आवरण : अमिताभ राय

शब्द-संयोजन : साईं कृपा कंप्यूटर्स, दिल्ली-110092

प्रिंटर्स : आर.के. आफसेट
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

RITUGANDH
by Dr. Suraj Mridul

जिन्होंने मुझ पर
अगाध स्नेह, ममता और प्यार,
न्योछावर किया है उन
श्रद्धेय माताश्री-पिताश्री के
कर-कमलों में समर्पित!

प्रकृतिजन्य अनुभव की कविताएँ

'कल' हिन्दी कविता अपने कई रंगों, रूपों, रस और भावभूमि के साथ पहचानी जाती थी और उन्हीं के कारण उसका विकास सुनिश्चित था। वह एक पहचान के साथ सर्वत्र परिव्याप्त थी, गन्ध की तरह फैली थी पारुद्वार तक! इसका विषय-प्रवेश बड़ा सुविस्तृत था और उसके प्रतिपाद्य में भारतीयता और सांस्कृतिक चेतना के अंग करवट लेते थे। छन्द-भाव-भाषा के साथ वह बड़ी मनोहारी, पठनीय एवं श्रवण योग्य भी थी। उसे पढ़कर अरसिक लोग भी रस में डूब जाया करते थे। किंतु वह कल की बात थी, कल जैसी, एक परम्परा से जुड़ी, एक लीक पर आगे तक चलने की आदी सीधी-सादी हिन्दी कविता।

छन्दहीन होने के साथ ही हिन्दी कविता से 'कल' विलुप्त होता चला गया और वह रह गयी 'आज की कविता'। आज जैसी कविता, एक-एक क्षण की कविता और अधिक कहें तो सिर्फ कवि की कविता-नितान्त वैयक्तिक और निजीपन की द्योतक!

डॉ. सूरज मृदुल की कविताएँ आज की कविता हैं, जो प्रकृति के निकटस्थ होते हुए भी छायावादी काव्यधारा से भिन्न तो हैं ही, काव्य की नयी प्रवृत्तियों और नये तत्त्वों से उतनी ही समन्वित हैं, जितनी कविता से युगधारा! ये कविताएँ प्रयोगात्मक होने के साथ नयी कविता की शिल्पगत विशेषताओं से भी सम्पन्न हैं। साथ ही साथ, ये कविताएँ सरलीकृत सूत्र में मानव समष्टि के आग्रह के साथ नयी मन:स्थिति को चित्रित करती हुई संक्षेप में सृजित हुई हैं। ये नयी कविता की विषयगत विशिष्टताओं की कविताएँ हैं, जिनमें समसामयिकता को लेकर जो नये प्रयोग किये गये हैं, वे नये और सर्वथा अछूते हैं!

कहना चाहूँगा, जब जीवन-शैली, मूल्य, लोकाचार और जीवन जीने के उद्देश्य सब में बदलाव आया है, साहित्य क्षेत्र में भी क्रान्तिमूलक भावनाधारा

प्रवाहित है, फिर कविता का रूप-स्वरूप नहीं बदले-यह कैसे सम्भव है ? आज कविता लिखने, जीने और पढ़ने के रूप परिवर्तित हो गये हैं तो कवि को यह छूट है, वह अपने को अपनी शैली में और अपने ढंग से अभिव्यक्त करे, भले ही वह कविता हो, कहानी हो या कोई दूसरी विधा में लिखी रचना!

डॉ. सूरज मृदुल इस माने में मौलिक और भिन्न हैं कि उन्होंने जैसा जो अनुभूत किया, उसे ज्यों का त्यों व्यक्त भी कर दिया। वे अपनी जगह बिल्कुल सही हैं और कवि की रचना का अपना संचार होता है जो उनके पास है!

कहना चाहूँगा, आज कविता की परिभाषा महावीर प्रसाद द्विवेदी और श्याम सुन्दरदास की परिभाषाओं से एकदम भिन्न है, जो सत्यं- शिवं -सुन्दरम् के चौखटे में पूरी तरह जड़ी थी। आज कविता का विषय प्रदेश छोटा नहीं रहा। कविता कहीं परिवेशी है, कहीं अलग-सी शीर्षक विहीन तो कहीं छोटी-बड़ी और कहीं सिर्फ कविता। उसे किसी परिभाषा में बाँधना उसके नयेपन और उसकी ताजगी को कम करने जैसा होगा।

डॉ. सूरज मृदुल की ऋतुगन्ध की, दरअसल कविताएँ जीवन की सरस चित्रकृतियाँ हैं जो अपनी अप्रतिम छवियों के साथ गहरी अनुगूँज लिये हुए है। आवश्यकता इनको समझने और गुनने की है, ये जिये हुए क्षणों की कविताएँ हैं, जिसका सम्बन्ध कवि के निजीपन की अभिव्यक्ति से है। एक माने में ये कविताएँ अभिव्यक्ति की नवीनता के कारण समय-साक्ष्य कविताएँ भी हैं, जिन्हें दूसरी किसी साक्षी की आवश्यकता नहीं। मुझसे भूमिका लिखने का आग्रह करके डॉ. सूरज मृदुल ने मुझे भी उपकृत किया है। अन्यथा आप कविता पढ़िए और समझिए। कवि को जैसा लगा, उसने वैसी ही कविताएँ लिखी हैं और अब वे कितनी सार्थक हैं, यह विषय पाठकों का है, कवि का नहीं। यों भी मनुष्यकृत लोकतन्त्र में कवि को इतनी छूट तो है ही कि वह जैसा अनुभूते, वैसा लिखे।

डॉ. सूरज मृदुल की इन कविताओं में कहीं फूलों के रंग हैं, कहीं जीवन की तरंगों-उमंगों के रंग, तो कहीं सामीप्य के रंग—चाहे वे फागुनी हों, दीपोत्सव की या कोई और! ये कविताएँ कई-कई रंगों के साथ, अपनी छटा बिखेरती हैं।

एक सत्य यह है कि जैसे कविता लिखने के क्षण होते हैं, वैसे ही उसे पढ़ने-समझने के भी। आप उन्हीं क्षणों में अच्छी कविता समझ सकते हैं, वह कोई जासूसी उपन्यास या मनगढ़न्त कहानी भी नहीं, जिसे जब चाहा और जैसे चाहा पढ़ लिया। कविता सुकोमल भावनाओं का जीवन्त दर्पण है, जिसमें बार-

बार झाँकने पर ही कोई तस्वीर उजली नजर आती है, मन की तस्वीर की तरह! मैंने इन कविताओं को अलग-अलग क्षणों में पढ़कर देखा है, ये मन को कहीं गहरे तक छूती हैं। इनमें बनावटीपन कहीं नहीं है और ये बड़ी तन्मयता के साथ बुनी गयी हैं, किसी स्वेटर के एक-एक घर की मानिन्द!

यदि आप डॉ. सूरज मृदुल की कविताओं से दोस्ती बढ़ाना चाहते हैं तो आपको उनकी संश्लिस्ट अर्थवत्ता पर विचार करना होगा! आप इन कविताओं का सान्निध्य चाहते हैं तो आपको शब्दों पर नहीं उसकी गहनता से गुजरना होगा। तब आप इन कविताओं से प्रेम करने लगेंगे।

कहना चाहूँगा ये कविताएँ आपके मन की कविताएँ हैं, आपके अभिसार और भूख की कविताएँ हैं, यदि आप इन्हें अपनी कविता मानकर पढ़ें। ये कविताएँ आपको ऐसे विषय और परिवेश से जोड़ने की क्षमता रखती हैं।

जिसे आप अपनी तरह जीना चाहते हैं उन काव्य-रचनाओं में भावों के निर्झर शब्दों के माध्यम से, भाषा के साथ प्रवाहित है और सजराभिव्यक्ति से अपनी जमीन बनाये हुए हैं!

ऋतुगन्ध की कविताओं में 'दीपशिखा' फागुनी रंग, जूही का फूल, बाँसुरी, सूर्यमुखी, अनुराग का सिंदूर, पुष्प खिल उठे, चाँद और चाँदनी, इन्द्रधनुषी बरसात, पूनम का चाँद, एक सौन्दर्यबोध और बादल बिन बरसात आदि ऐसी कविताएँ हैं जिनका सीधा सम्बन्ध प्रकृतिजन्य अनुभव से है किंतु जीवन के रंगों से भी पृथक् नहीं है। शेष कविताएँ भी पठनीय हैं, एक सौ एक कविताओं में ऐसी अनेक कविताएँ हैं जो पाठक को अलग से क्षणों को जीने के लिए प्रेरित करती हैं।

14 जनवरी 2003 ई.

डॉ. तारा दत्ता 'निर्विरोध'

254, पद्मावती कालोनी 'ए'
अजमेर रोड, जयपुर-302019 (राजस्थान)

सम्मतियाँ

'ऋतुगन्ध' यशस्वी कवि डॉ. सूरज मृदुल की तीसरी कविता-संग्रह की प्रकाशित पुस्तक है। पिछले दिनों उनकी रचनाओं ने लोकप्रियता प्राप्त की है और अब वह एक स्थापित कवि के रूप में साहित्य-संसार में प्रकाशित होंगे। यह आशा अकारण नहीं है। आशा ही नहीं कवि-प्रेमियों का यह सुदृढ़ विश्वास भी है!

इन्होंने कविता कहानी और विविध प्रकार की रचनाओं में अपनी प्रतिभा की चाँदनी छिटकायी है। यह क्रम अटूट रहेगा और डॉ. सूरज मृदुल आने वाले दिनों में एक प्रतिभाशाली रचनाकार के रूप में प्रकाशित होंगे। तथास्तु!

—आचार्य जानकी बल्लभ शास्त्री

निराला निकेतन
आचार्य जानकी बल्लभ शास्त्री-पथ
मुजफ्फरपुर-842001 (बिहार)

डॉ. सूरज मृदुल जी के संग्रह 'ऋतुगन्ध' की अधिकांश कविता, उनके हृदय की धड़कनें शब्द का रूप लेकर, कुछ इस प्रकार निःसृत हुई हैं कि मृदुल जी ने अपनी कविताओं का प्रमुख विषय उस शाश्वत भाव को बनाया है जिसे 'प्रेम' कहते हैं। 'प्रेम' ही 'शिव' है और सुन्दरम् भी है। वह 'शिव' है इसलिए कल्याणकारी है, 'सुन्दरम्' है, इसलिए आकर्षक है। प्रेम और सौन्दर्य का तो सम्बन्ध हमेशा ही रहा है, कभी वस्तुगत होकर और कभी विषयगत होकर। दोनों का सौन्दर्य एक 'अमर प्रेम' की संरचना करते हैं, और जब यह प्रेम कलात्मकता के साथ शब्दों में अभिव्यक्त होने लगता है तो वह रचना बन जाता है, ऐसी रचना जो श्रोता और पाठक का हृदय-हार बन जाती है!

प्रेम और सौन्दर्य के विभिन्न छवियों को डॉ. मृदुल ने अनेक शब्दचित्रों में

उकेरा है। ये छवियाँ कभी उस अमावस की रात की हैं, जिसमें दीपमाला अपनी लौ से प्रकाश की किरणें बिखेर रही है और उसी के बीच दो प्रेमी हाथ में हाथ डाले मन में दीप जलाये हुए प्रेम-पथ से गुजर रहे हैं। इन छवियों में एक छवि उस नायिका की भी है, जो अपने हाथ-पैरों की उँगलियों को रँग रही है और जिसके चेहरे पर यौवन की लालिमा खिल उठी है, जो नीची निगाहें करके शरमा रही है और जिसके केश-जाल में लगा गजरा महक रहा है। एक छवि वह भी है, जिसमें चाँदनी स्वयं फूलों की सेज बन जाती है और उस पर बैठा कोई इठलाता-इतराता सलोना चेहरा, किसी नये इन्द्र धनुष का रूप बन जाता है। एक छवि ऐसी भी है, जिसके मदभरे नयनों में सुनहले सपनों की नैया डोलती नजर आती है, जिसके पुष्ट यौवन पर रसभरे अधर खिलते-खुलते हैं, जिसका अल्हड़पन एवं वाली उमर अजन्ता के गदराये यौवन को आगोश में लिये बैठे हैं, जिसका संगमरमरी बदन, ताजमहल बनकर चाँदनी बरसा रहा है, जिसने अपनी जिन्दगी की खुशबू से नायक को इस तरह बाँध लिया है मानो उसे सुख का संसार मिल गया हो। जिस स्वरूप में होली के रंग छिटक रहे हैं, जिसके रूप लावण्य से मन में लाखों पुष्प खिल उठते हैं, जिसकी सौन्दर्य-छटा यौवन की हरियाली में फूल बनकर खिल उठी है और मुहब्बत का सावन बन गयी है। ऐसा स्वरूप जिसे देखकर, कानों में शहनाइयाँ बजने लगती हैं, मन गुनगुनाने लगता है।

अन्तत: कवि डॉ. सूरज मृदुल ने बड़ी मृदुल भाषा में उस सौन्दर्य की छवियों और प्रतिच्छवियों को चित्रित किया है, जो नेत्रों का बरबस आकर्षण बनता है। जो हृदय में आन्दोलन -सा मचा देता है, जो मन के भीतर बसे प्यार को पुकारता है। मुझे विश्वास है कि सौन्दर्य की 'मनोरम वाटिका' की तरह यह संग्रह 'प्रेम और सौन्दर्य' में रुचि रखने वाले पाठकों को अवश्य पसन्द आएगा।

—डॉ. कुँअर बेचैन

'कवितायन'
2 एफ-51, नेहरू नगर
गाजियाबाद-201001(उ.प्र.)

भावनाओं का आलोड़न-विलोड़न जब उत्कर्ष पर होता है तब उसे शब्दों में रूपायित करने के लिए लेखनी मचलने लगती है और एक कविता की प्यारी मूर्ति सामने खड़ी हो जाती है। कभी करुणा की तरल और सचल अन्तर्धारा में

ज्वार उठने लगता है। और कवि ब्रह्मानन्द सहोदर का आनन्द पा औरों को आनन्दित कर देना चाहता है ताकि जग सत्यमय, शिवमय, सुन्दरमय बन सके।

प्रकृति का श्रृंगारिक रूप किसे न लुभाता है और जब प्रकृति नारी के रूप में सामने आती है। तो कौन नहीं उसका बन जाना चाहता है । शायद यही कारण है कि कवि डॉ. सूरज मृदुल प्रेम में गहरे डूबकर कुछ नूतन मोती सबों को देना चाहता है।

इस 'ऋतुगन्ध ' में कई ऐसे स्थल है जहाँ आप डूबते-उतराते आनन्दित हुए बिना नहीं रह सकेंगे। कवि अपने शब्दों से ऐसे बिम्ब खड़ा करता है कि कवि की नीति अनुभूतियों में भी सहृदय पाठक, अपनी ही अनुभूति समझने लगता है। जीवन के सौ बसन्तों को देखते हुए ऐसी ही रचना कवि की लेखनी से निःसृत होती रहे, यही मेरी शुभकामना है।

—निरंजन कुमार 'निर्भय'

बसन्त पंचमी
डाक तार कॉलोनी
दूरसंचार-II/24
मिठनपुरा,
मुजफ्फरपुर-842002 (बिहार)

निवेदन

'ऋतुगन्ध' मेरी तीसरी काव्य कृति है। मैं नैसर्गिक प्रकृति से प्यार करता हूँ इसलिए प्राकृतिक छटा के जितने भी रंग हैं, उन्हें मैंने अपनी कविता के माध्यम से प्रस्तुत किया है। जैसा मैंने देखा है, जब आदमी जन्म लेता है, उसी समय से वह प्रकृति से भी प्रेम करने लगता है। मेरा भी प्रकृति से प्रेम हो जाना स्वाभाविक है। अत: जैसा जो अनुभूत किया, उसे वैसा ही व्यक्त भी कर दिया है।

इस कृति में मेरी छियानबे कविताएँ हैं। इन कविताओं में प्राकृतिक परिवेश के अतिरिक्त मानवीय पक्ष भी उभारे गये हैं जो प्राकृतिक सान्निध्य तो देते ही हैं नारी-सृष्टि और ममता, वात्सल्य, श्रद्धा-प्रेम की महत्ता भी प्रकटाते हैं। नैसर्गिक सुख की उम्र बड़ी होती है और यह बात, उन कविताओं को पढ़कर समझी जा सकती है।

'ऋतुगन्ध' आप जैसे सजग पाठक के हाथों में है। आप इसे पढ़िए, देखिए, परखिए और अपनी प्रतिक्रिया मुझे भेजिए, क्योंकि आपकी प्रतिक्रिया से मेरा मार्ग प्रशस्त होगा।

अन्त में मैं श्रद्धेय डॉ. तारादत्त निर्विरोध जी का आभारी हूँ, जिन्होंने कृति की भूमिका लिखी और मुझे अनुजवत् स्नेह दिया। मैं कृति के प्रकाशक को भी धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने मेरी इस कृति को सुन्दर ढंग से प्रकाशित किया।

—डॉ. सूरज मृदुल

सरस्वती पूजा दिवस
गुरुद्वारा के सामने, रमना
मुजफ्फरपुर-842002 (बिहार)

अनुक्रम

जल रहे हैं दीप

दीप की रोशनी में
अमावस्या की रात,
सुगन्ध बनकर निखर गयी है
तभी तो हम-तुम
हाथों में हाथ डाले
दूर तक साथ चल रहे हैं!

रास्ते में,
खूबसूरत छोटे-छोटे दीप की लौ
रोशनी बनकर दूर-दूर छिटकी है
जैसे आज,
हमारे मिलन की घड़ी है
तभी तो हमारे-तुम्हारे
मन के आँगन में भी दीप जल रहे हैं!

आओ, हम दोनों और पास आ जाएँ
क्योंकि—
यह समय
खुशगवार और सुहावना है।
इसलिए रास्ते में—
खूबसूरत छोटे-छोटे दीप की लौ
रोशनी बनकर निखर रही है!

सुन्दर-सा सपना

अच्छा लगता है
खूबसूरत चेहरे पर
मोर के पंख से
चित्रकारी करना
हाथ-पैर की उँगलियाँ रँगना
और चित्रकारी कर—
चेहरे की सुन्दरता में,
चार चाँद लगाना!

नायिका का,
यह मुख और अंग-प्रसाधन,
मानो उसकी आँखों में
कोई सुन्दर-सा सपना
तैरता हुआ खिंच गया हो!

इस तरह आज—
सजने-धजने से
यौवन में निखार आया है,
जैसे अंग-अंग
खिलकर,
आस-पास खुशबू फैला रहा हो!

सुन्दर

नीची निगाहें
कर शर्माना।
पास आये परदेशी को
देखकर,
अचम्भा—
होने का यह अन्दाज
यह सौन्दर्य और सुगन्ध
आस-पास बिखर पड़ी है!
बालों में लगा
यह सुन्दर गजरा
और माथे पर लगी
लाल बिन्दी की—
खूबसूरती,
मानो आज,
चाँदनी भरी रातों में
बेदाग खूबसूरत चन्द्रमा,
इस धरती पर,
उतर आया हो!

दीपशिखा

दीपों से सजा-सँवरा
निखरा—
नवज्योति जैसा
नया जीवन,
सींच रहा,
दीपावली की यह रात!

दीपशिखा!
जैसे तेरा खूबसूरत चेहरा
यूँ चमक-दमक रहा है
जैसे बिजली ने—
तुम्हारे स्वागत के लिए
यहाँ डाला है डेरा!

ऐसे दीपों के बगीचों में
किसी शोख कली को देख
किसका मन
एक-दूसरे में
क्यों नहीं
खो जाना चाहेगा?

आँखों में

काली रात हो,
जब तुम इँजोरिया बनकर
मेरे चेहरे के सामने आती हो,
तो ऐसा लगता है,
जैसे खूबसूरत चाँद,
बनकर तुम—
मेरी आँखों में समा गयी हो!

तुम जब दिन में
किस्म-किस्म के
फूलों के बीच—
इस प्रकृति में दीखती हो,
तो तुम इन फूलों की घाटियों में
एक सुन्दर फूल की खुशबू बन,
मेरे मन-मस्तिष्क में छा जाती हो!

तुम्हारे जीवन का यही प्रारूप है
कि जब-जब
तुम मेरी जिन्दगी में आयी हो,
तब-तब नया रूप बदलकर,
हर जन्म में—
स्वागत करती हुई
मेरे ह्रदय में छा गयी हो!

फागुनी रंग

रंग
फिर चढ़ गये
फागुनी-बयारों में,
तन-मन खिल गया,
सरसों भरे,
बसन्त के आँगन में !

हवा जब हिमालय से होकर,
चलती है,
तो फिर घुँघरू की आवाज
गूँजने लगती है,
खुशबू बनकर,
इस वायुमण्डल के बादलों में!

जैसे तबले पर—
पैर की थाप पड़ी हो!
किसी खूबसूरत
कोमलांगिनी यौवना की,
मादक देह,जैसे तेरे नैन,
फिर किसी को—
आज आकर्षित करने लगे हैं!

बूँदों में

भावनाओं के स्पन्दन
और मन्दाकिनी जैसी—
कल-कल करती,
ये सुन्दर धारा—
जैसे मन मोह रही हैं
ये नदी की सुन्दर घाटियाँ!

रात के काले-काले
आँचल में,
जैसे—
कोई अधखिली कलियाँ
अपने मोहक अन्दाज से
इस वातावरण में तैर गयी हों!

ऐसा प्रतीत होता है
मानो झिलमिलाती—
पानी की बूँदों में
आज कोई प्रेमिका
खुशबू फैलाये—
प्रेमी से मिलने आ गयी है!

जुही का फूल

पेड़ की लता की तरह
लिपटी ये खूबसूरत लटें
इस तरह
तेरे चेहरे पर छायी हुई,
जैसे सुगन्धित चन्दन के पेड़ में—
कोई लिपटा हुआ काला सर्प हो!

भीगे फुहासों में—
यह जुही का फूल,
आज खिलखिलाकर,
यों हँस पड़ा है
जैसे मेरे मन-दर्पण को,
प्यार से सराबोर कर दिया गया हो!

आँखों की ये नमी—
फूलों की ये पंखुरी
चिड़ियों की तरह फुदकती ये तितलियाँ,
कोमलता के अधर को पी रही हैं
मानो चौदहवीं का चाँद
किसी के मन में समा गया हो!

प्रकृति के अपार सौन्दर्य के बीच—

इस हरियाली जैसे वातावरण में
प्यासी धरती में,
खूबसूरत धूप की किरणें,
आज—
इधर-उधर बिखर गयी हैं।

बादल की डोली में

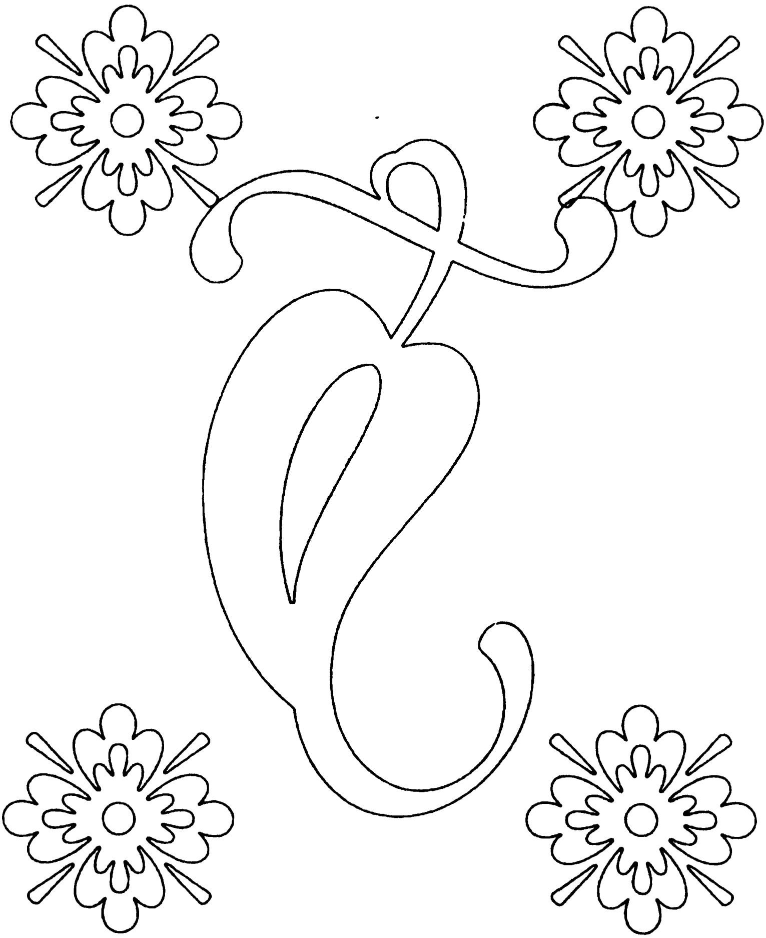
आज चाँदनी—
फूलों की सेज बनी बैठी है,
उसमें इठलाता-बलखाता
एक रूप सलोना चेहरा
मानो एक नया इन्द्रधनुष बन गया है!

तेरी झील वाली आँखों में
सूरज की—
मीठी-मीठी खुशगवार रोशनी में
आज तू किसी की,
जीवन सरिता बन गयी है!

तेरा शबनमी चेहरा
देखकर—
लगता है जैसे आसमाँ पर
नया धवल चाँद उग आया हो!

बादल की डोली में बैठकर
जैसे सुरभि लहरायी है
दूधिया-सा शृंगार कर तू—
आज यौवन की मदिरा बन,
सरसों के फूल-सी खिल आयी है!

इस ऊँघती मधुमास की वेला में
मदहोश कर देने वाली
ये यौवन सुरभि चेहरा
अठखेलियाँ करती हुई,
जैसे तू सपनों के आँगन में मिली है!



जीवन के आँगन में

हमारा-तुम्हारा
जीता है संसार
इस मधुर जीवन के आँगन में
इसलिए जीवन नहीं रुकता
मदहोश जवानी के इस सागर में!

इस भूमण्डल में—
जवानी के दलहीज पर
कोई इस तरह पैर रखने लगा है
मानो आज सारा फूल महकने लगा है
इस आँगन की बगिया में!

फिर आज—
नवोदित सूरज के
इन्द्रधनुषी रंगों में
कोई बीज अँकुरा है
तुम्हारे जीवन के आँगन में!

तभी तो नैनों में कुछ स्वप्न लिये—
ऐश्वर्य के परिधान में
अपने सोलह श्रृंगार में
गुम हैं जैसे हम दोनों आज
एक-दूसरे की बाँहों में हों!

जीने की प्रेरणा

तेरे चेहरे का नूर ऐसा
जो उजाला बनकर
मुझे जिलाता है
हरदम मुझे रिझाता है
जैसे तू एक खूबसूरत बहार की परी हो!

तुझे देखकर
मेरा सारा गम का समुन्दर
सपने की खुमारी में तैर गया
मानो जीने की प्रेरणा दे रही हो
जैसे तू एक खूबसूरत बहार की परी हो!

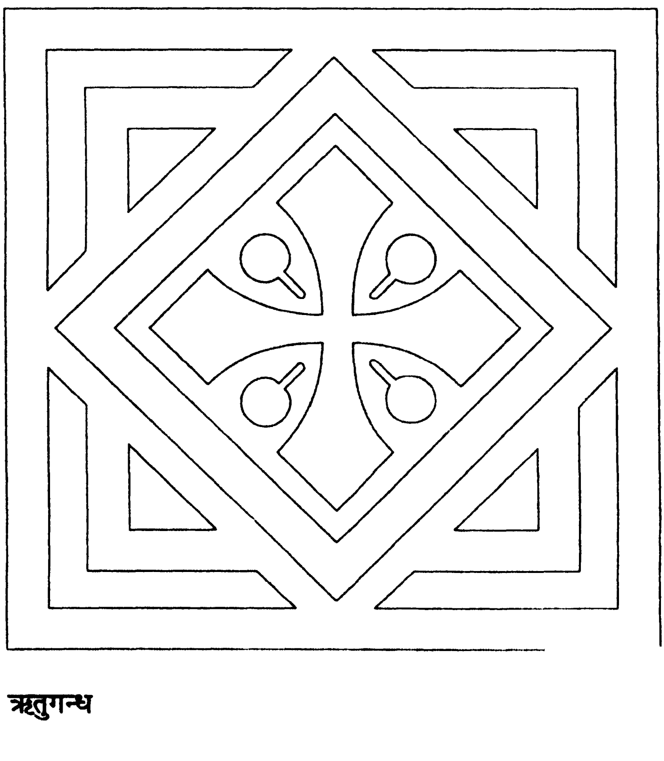
तू मेरी अन्तर्दृष्टियों के बिन्दुओं से
मेरे स्वप्न के रगों से
आज गुलाब की तरह बनकर
मेरे अन्तर्मन में खिल गयी है
जैसे तू एक खूबसूरत बहार की परी हो!

आज तेरा मन-दर्पण
अनुपम आलोक बन,
मुझे सम्मोहित करने लगा है
यह सिलसिला तेरे पास आने से हुआ है

जैसे तू एक खूबसूरत बहार की परी हो!

तेरे प्यार के बन्धन ने,
आज मेरे जीवन को,
बाँध लिया है
रेशम जैसे कोमल बन्धन में
जैसे तू एक खूबसूरत बहार की परी हो!

आज ताजगी से बनी
तू कोई मूर्ति,
मानो ओस में नहायी हो
तभी तो तेरे आस-पास हमेशा
गुलाबी बसन्त की रंगत, बिखरी दीखती है!



तुम्हारे सुनहरे बाल

तुम्हें देखकर—
मेरे मन-नयनों में
ऐसा लगता है
आज जमीं पर
इन्द्रधनुषी आकाश से
कोई श्वेत परी उतर आयी हो!

तुम्हारे भूरे खूबसूरत
सुनहरे बालों की—
ये लटें,
सावन की घटा बन,
किसी को रिझाने लगी हैं
मानो सौन्दर्य के देश से
एक अप्सरा उतरकर आयी हो!

तुम्हारे बदन पर
चाँद की,
पूर्णमासी का थाल बन,
तुम्हारी संगमरमरी काया पर
चाँदनी उभर आयी है
मानो तुम जन्नत का ख्वाब बन गयी हो!

रूपवती रानी

ये मदभरे नैनों में—
एक झलकते,
सपनों की रूप-देखा
की नैया—
डोलती नजर आ रही है!

लाल होठ—
रस से भींगी हुई
मानो गुलाब की दो पंखुड़ियाँ,
आज जैसे मौन निमन्त्रण—
देती हुई नजर आ रही हैं!

ये चितवन-सी खड़ी
रूपवती रानी—
ये तेरे गेसुओं की लटें
और मदभरे नैना,
जैसे पलकों के चिलमन से झाँक रही हैं!

ऐसे अपूर्व नरगिसी चेहरे ने
आज कयामत ढा रखी है
तभी तो कोई राहगीर—
इस लावण्य को देखकर,
मोहित खड़ा, दूर नजर आ रहा है!

बोझिल-बोझिल चेहरा

यह मासूम
रूप सादा-सादा
कितना सुन्दर-मतवाला—
तेरा प्यारा-प्यारा चेहरा!

बिना अस्त्र के
बिना शस्त्र के
सिर्फ अपनी हर अदा से
घायल करता चेहरा!

पुष्ट यौवन जिस पर
रसभरे अधर,
खिलता-खुलता-मुस्कुराता
कजरारे नयनों से
पास बुलाता चेहरा!

जिन्दगी के आस-पास

मेरी जिन्दगी के
धरातल के आस-पास
तुम ऐसे लगती हो,
मानो मेरे सुनहरे,
ख्वाब की तस्वीर-सी हो!

मेरी जिन्दगी के
साये की ओट में,
तुम्हारा हर रंग कयामत है,
होठों में यह 'जुम्बिश' रखना
मानो मेरी खुशनसीबी हो!

वैसे भी—
तुम्हारा यह मुस्कुराना
बल खाकर पगडण्डियों की तरह चलना
ऐसे ही प्यारी अदा से लुभाती है,
मानो खिलने वाली शबनम भरी कली हो!

यह मदहोश तन्हा
खामोशभरी तेरी निगाहें
और ये चितवन-चेहरा?
मानो दरम्यानी रातों का चाँद बन
आज खुशबू फैला रही हो!

प्रकृति की खूबसूरती

तेरा अल्हड़पन
और—
ये वाली उमरिया
अजन्ता के
गहराये यौवन की तरह
पूरे वातावरण को
आज आगोश में ले बैठा है!

वह आज
इस प्रकृति की
खूबसूरत रचनाओं में से एक है
तभी तो इस शोख अदा से—
यह वातावरण,
मदहोश होता चला जा रहा है।

जैसे दूर बादलों के
मदहोश वातावरण में
शोख भरे अन्दाजों से
कोई हमसफर
समुद्र के लहराती लहरों पर
हाथों में हाथ डाले घूम रहा है!

जुही की सुगन्ध

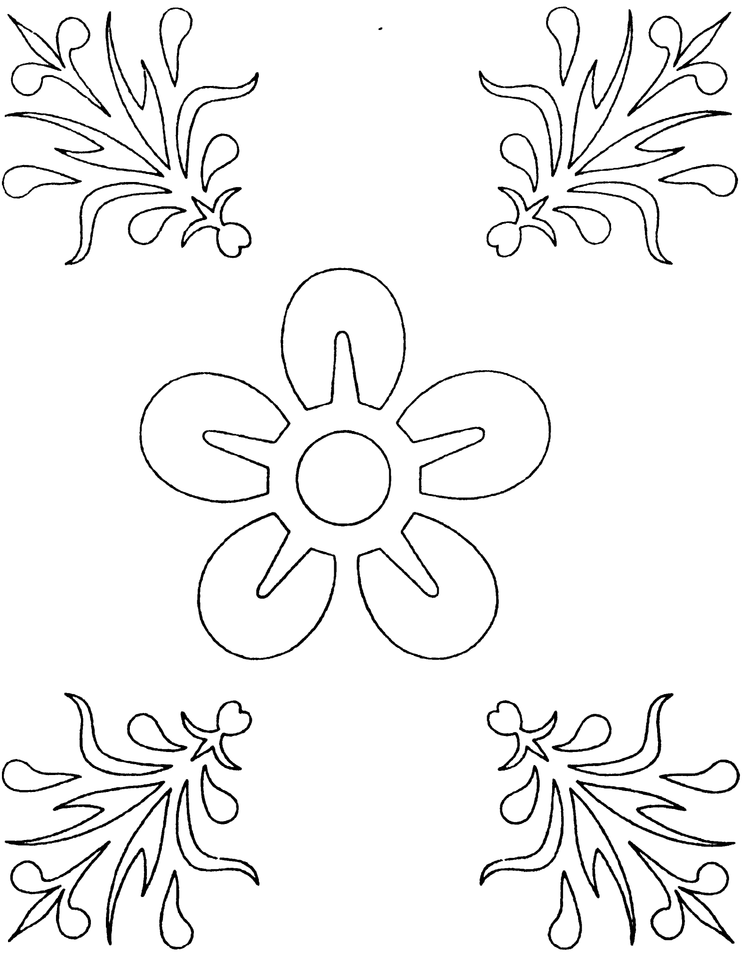
तेरी जुल्फों की,
रंगीन हुए बसन्त से गुलाबी,
बहारों में—
आज मेरी जिन्दगी
खुशनसीब बन गयी है!

जुही की
सम्मोहन करने वाली,
मीठी-मीठी सुगन्ध,
फिर आज धीरे-धीरे
सुवासित हो गयी है!

तेरी जुल्फों की
रंगीन हुए बसन्त से गुलाबी,
बहारों में—
आज मेरी जिन्दगी
खुशनसीब बन गयी है!

तेरे यौवन की,
मस्त बहार
आज अंग-अंग मादक होने लगी है
जैसे फिर—
गुलाब की तरह तू खिल गयी है।

सचमुच—
दूर बादलों के,
झुरमुटों के बीच—
ऐसे फूलों की घाटियों में
कौन नहीं,
एक-दूसरे के बाँहों में,
खो जाना न चाहेगा?



चंचल चितवन

चाँदी जैसा चेहरा
सोने जैसा ये बदन
होठ भी लाल फूल की कलियाँ बनी हैं
और ये रूप
किसी के हृदय में चुपके से समा गयी है
जैसे किसी को अपने आगोश में लेकर
बेहोश बनी, आज किसी को मदहोश कर रही है!

तेरा ये यौवन
महकाता-बहकाता, खुशबू फैलाता
यह चंचल चितवन
पूनम इस की सुन्दर चाँदनी में
किसी को अपने आगोश में लेकर
बेहोश कर रही है
किसी को आज मदहोश कर रही है!

मधुशाला हुए इस
नजाकत बने यौवन को
कोई पीना चाह रहा है
क्योंकि तुम्हारी ये कातिल आँखें
किसी को अपने आगोश में लेकर
बेहोश कर रही है

किसी को आज मदहोश कर रही है।

आज तेरे सलोने रूप का
दीदार हुआ
तन-मन सब खिल गया है
जैसे तुम्हारी दिलकश हँसी ने
मतवाले हुश्न का दरिया बन
छलका दिया हो,
जिससे तन-बदन पर सरूर छा गया है!

ये तुम्हारे संगे-मरमरी बदन
जैसे तुम ताजमहल बनकर
आज अपनी चाँदनी बरसा रही हो
मानो वर्षा में
कोई नवयौवना भीगे आँचल में लिपटी हो
और अपनी शोख अदा से—
किसी को मदहोश कर रही हो!

पिया के देश से आयी है

आज
तेरी खिलखिलाती हँसी देख
हरी-भरी वादियों में
कलियाँ ऐसे मुस्कायीं
जैसे क्यारी-क्यारी,
टहनी-टहनी,
फूल खिल उठी है!

तभी तो ये जुल्फ
बहार के झोंकों से—
गुजरकर,
मस्ती भरे आलम में
साजन की—
राज की बात
लेकर सखियों के पास आयी है!

और अब वह अपने
चेहरे के रूप-सौन्दर्य को,
कंचन जैसे बदन की
ये रुपहली अँगड़ाइयाँ
सखियों के पास,
उद्वेलित करने लगी हैं
मानो पिया के देश से आयी है!

मस्त बयार में

फागुन की
मस्त बयार से तुमने
मेरे तन-मन को—
आज किया है,
भाव-विभोर!

आज
मेरी आँखों के सागर में
एक इन्द्रधनुषी सुन्दर सपना
तैर गया है!

लगता है
इस बोली में
चार नैनों की
बातों की कुछ अनसुलझी गुत्थी
शायद इस बार सुलझेगी!

तभी तो इस फागुन की—
मस्त बहारों में
प्यार की दूरी
कुछ तो कम होगी!

बाँसुरी

रोज सुबह
दूर से—
रस की चाशनी से भी,
मीठी-मीठी
बाँसुरी की आवाज
मैंने सुनी है!

चाँद सितारों के बीच
यौवन की अरुणाई से भींगी हुई
एक नयनाभिराम,
स्वप्न-सुन्दरी को,
सितारों के आस-पास
छिपते हुए देखा है!

रोज मैं,
बाँसुरी की आवाज
हवा के पंखों पर
लहराते हुए सुनता हूँ,
जैसे कान्हा ने—
आज फिर बाँसुरी बजायी हो!

सूर्यमुखी

तेरे ये झुके-झुके
कपोल,
और तेरे माथे पर,
सिन्दूर का कुमकुम लगाने का,
यह अनोखा तरीका—
जैसे मोहक अन्दाज से,
मुग्ध होकर—
सलीके से सजी-सँवरी
आनन्द-विभोर होकर,
एक रूपवती,
मानो
गुलाब के बगीचे में
कोई बन्द कली
सूर्यमुखी-जैसी खिली बैठी हो!

जुगनू चमक गया

अँधेरी रात में
इस काली-गहराती
चादर के बीच—
दो जुगनू,
आज चमक गये हैं!

तभी तो
तुम्हारा खिला-खिला
यह रूप-सौन्दर्य देख,
आज फिर,
चाँद शरमा गया है!

मानो
एक शान्त युवती
सौम्य और कोमल भाव से
अपने मन-प्राण के साथ,
आलिंगनबद्ध हो गयी हो!

खूबसूरत हँसी

तेरे इस केश-विन्यास
और लाल डोरे-जैसी—
शरबती आँखों के बीच,
मतवाले रंगीन
हुए होंठ,
जैसे अभी-अभी
हमाम से निलकर आयी हो !

और बूँद की लटें,
मोतियों के दाने के
समान गुँथ गयी हैं!
आज तुम्हारी ये खूबसूरत हँसी
प्रस्फुटित होकर—
मतवाले नैनों से,
मुझ पर जादू करने लगी है!

तेरे यौवन की
मस्त बहार—
आज फिर सुवासित होकर,
गुलाब की तरह खिल गयी है,
इस सादगी पर भी
तेरे चेहरे में
पूर्ण सौम्यता समायी हुई है!

रंगों के बीच

होली के रंग
जीवन के संग
तेरे चेहरे पर
उभरने लगे हैं!
मानो तेरी सूनी माँग
आज सिन्दूर से
खूब सजने लगी है!

आज
फागुन की वेला में
इस रंगों की होली के
छाँव तले—
लाल-पीले-हरे गुलाल
मुख पर लगने से,
तेरा मन आज खिलने लगा है!

सचमुच—
आज सारा जग
लगता है कि—
इस होली में
तन-मन सब
रंगों की वर्षा से
सराबोर होने लगा है!

खुशबू के पास

तूने अपनी जिन्दगी की
खुशबू से,
मुझे इस तरह बाँध लिया है,
मानो सुख का संसार
हमें आज मिल गया है!

दिलवर बनकर तूने
मादक फूल की खुशबू से
मुझे स्वर्गिक आनन्द का
आभास दिलाया है!

सचमुच—
इस मरुस्थल जैसे—
जीवन में तुमने,
आज रेगिस्तान में भी,
कोई फूल खिलाया है!

अनुराग का सिन्दूर

जीवन के मधुर कलश पर
पीली चुनरियों की डोली में,
कोई गुलाब की कली बन,
मादकता की खुशबू फैलाये
अपने अनुराग का सिन्दूर बनी खड़ी है!

आज कोई स्वयंवरा बनकर
मानो—
घनकेश-राशि में—
कुंकुम की थाली उगा ली है
जैसे आज कोई गीत की पायल,
सुरीले गीत बनकर,
मीठा रस घोलने लगी है!

आज तभी तो—
उषा की लालिमा में
इस यौवन की फुलवारी में
ओस के शबनमी बूँद
ओठ के गुलाब को पीने के लिए
कोई मादक आमन्त्रण लिये खड़ी है!

यह देख—

मेरा मन-मयूर नाचकर
उमड़ने-घुमड़ने लगा है!
जैसे आज कोई—
गीत की पायल
सुरीले गीत बनकर
मीठा रस घोलने लगी है!

इस बार फिर

आज मेरा पिया
दिसावर से घर आया है
मेरी आँखों में सतरंगा
दीप जल गया है,
सचमुच आज दीवाली मेरे घर आयी है!

मेरे रूप-रंग में
चार चाँद उग गये हैं
क्योंकि मैंने पहली बार पहनी है
दीपों की सतरंगी चुनरिया
सचमुच आज दीवाली मेरे घर आयी है!

दीपशिखा-सी,
झिलमिल करता
ये मेरा गोरा बदन,
भीनी-भीनी-सी महँकाती
कसमसाता और अँगड़ाई लेता ये बदन!

आज मेरे हृदय के
आँगन में दीप जलेगा
क्योंकि—
मेरा पिया इस बार,
दीवाली में घर आया है,
सचमुच आज दीवाली मेरे घर आयी है!

सितारों से आगे

दीपावली की शाम में
दीपों की जगमग
लौ के बीच—
मैं तुझसे मिलूँगा!

उस रात तेरे आँचल पर
इन दीपों से—
एक प्यार भरी कविता लिखूँगा,
और बहारों के फूल से—
उस आँचल पर बेल-बूटा बुनूँगा!

उस शाम,
सितारों से आगे
दीपों की माला में—
एक नयी दुनिया के बीच,
अपना एक अलग,
दीपों से सजा,
एक घर-संसार बनाऊँगा!

पुष्प खिल उठे

मैंने देखा है
तेरे चेहरे पर
तेरी आँखों में
एक आशियाना सपना!

इस सपने में हमने
आलिंगनबद्ध होकर
जीवन जीने की कसम खायी है!

तू प्यार का एक मन्दिर है
इस मन्दिर में
तेरी खूबसूरत बस्ती है
जिसकी मैं नित्य सजदा करता हूँ!

तेरे रूप-लावण्य से
दिल में—
लाखों पुष्प खिल उठे हैं
मानो—
आज चारों ओर
तेरे-मेरे बीच कसक भी
अँगड़ाइयाँ ले रही हो!

रेशम-सा कोमल

मैं तो आज
सपनों के देश में
नील गगन में
इधर-उधर घूमती-फिरती
अपने को खो दूँगी!

मुझे तुम
सपनों की बाँहों में
कहाँ-कहाँ ले जाओगे?

आओ आज
हम दोनों
प्यार के झुरमुट में
इस तरह खो जाएँ
हम-हम न रहें
और तुम-तुम न रहो!

रेशम-सा कोमल
अपना यह रिश्ता
प्यार की सोंधी-सोंधी
खुशबुओं की तरंग में
डूब जाएँ कि
दो शरीर एक जान बन जाएँ!

यौवन के पनघट पर

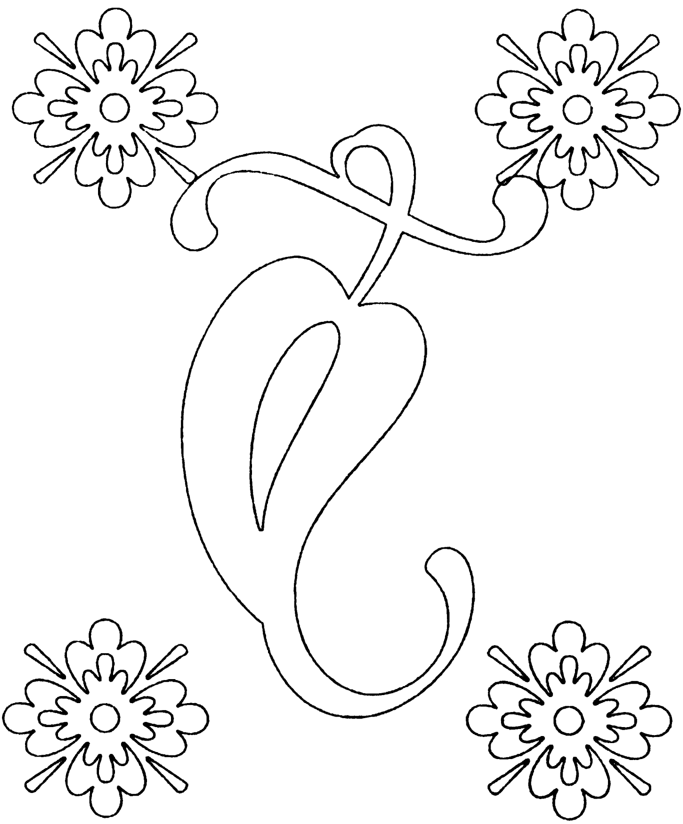
यौवन की फुहार में,
नैनों में कुछ स्वप्न लिये
सौन्दर्य की प्रतिमा बनी
ऐश्वर्य के परिधान में
अपने सोलह श्रृंगार में
मानो नीले आकाश पर
तू चाँद बनकर खिली हो!

तेरे इस अलंकृत
यौवन के पनघट पर
इस नशीली शाम में
तेरी मुहब्बत के सबब में
इस सोलह श्रृंगार में
तेरा चेहरा रोशन बन
मानो फूलों की खुशबू बन खिली हो!

इस सतरंगी दुनिया में
मैंने एहसास किया है
कि तू मेरे पास
तेरे प्यार भरे आकाश को
अब हम सितारों से सजा देंगे
अपने आलिंगन की खुशबू फैलाकर

सुनहरे यौवन के परचम में बहार भर देंगे!

गोया
तेरे इस तसव्वुर में
कभी हम मिले थे
दो जिस्म एक आत्मा बनकर
अभिसार किये थे
जब तू कली से फूल बन खिली थी!



चाँद और चाँदनी

इस यौवन की हरियाली में
तू ही तू दीख रही है
मानो सारी वादियों में
तू फूल बनकर
मोहब्बत का सावन बन गयी है!

अपने साँवलिया के लिए
सोलह शृंगार ओढ़कर
खूबसूरत प्रतिमा बन गयी है
मौन निमन्त्रण देकर
क्यों आज अपने साँवलिया से दूर खड़ी है!

आज तेरे यौवन की
सुहानी, भीनी-भीनी मादक सुगन्ध
इन फिजाँभरी वादियों में फैल गयी है
जैसे किसी यौवन के आँखों में
कुछ खूबसूरत सितारे जगमगा गयी हो!

मैं वासन्ती के द्वार पर
अपना केसरिया बाना पहनकर
अपनी जानम् के—
चंचल आँचल को बिखरते देख रहा हूँ,
मानो फिर कोई चाँद,
चाँदनी का बन गया हो !

अठखेलियाँ

फिर फागुनी चैत, अठखेलियाँ
करने लगा है हवाओं में
आम्रकुंजों के मंजर खिले
इन शोख-बहारों में
जैसे सूरज की किरणें—
श्वेत परी बन पास आयी हों।

उसके खूबसूरत शरीर, डाल बन,
आज लहरा रही है,
मद-मदिर हवाओं में
जिससे वह आज दोहरी हो रही है
इन खूबसूरत फिजाओं में
मानो इन्द्रधनुषी परी बन पास आयी हो!

आज सावन में
फूलों की बारात में
अपना नैसर्गिक सुख देकर
इस तरह समाँ बाँध रही है
जैसे कोई हमसफर,
फूलपरी बन पास आयी हो!

तू कैसे चली आयी

रस मदमाती बयार लिये
बरखा बहार लिये
यौवन के पनघट पर
तू कैसे चली आयी!

इन काली जुल्फों में
सावन की घटा लिये
कजरारे नयनों में
तू कैसे चली आयी!

बोल लिये प्यार भरे
अधरों से मुस्कान झरे
चम्पा-चमेली के बागों में
तू कैसे चली आयी!

नाच रही सखियों के संग
छम-छम छनन-छछन
हाथों सितार लिये
दिल में उतरने को
तू कैसे चली आयी!

चाँद कितना प्यारा

आओ देखो
जरा पास आकर
नभतल पर,
चाँद कितना प्यारा है!

खिल रही रात
सितारे जुड़े भरे
महमह करती रजनीगन्धा
देखो कितना प्यारा है!

मौन रहकर भी
बहुत कुछ कह जाती आज रजनी-बाला
आसमाँ आज इतराया-सा
देखो कितना प्यारा है!

दूर तलक वादियों में
यह गमक कैसी
चुपके से छोड़ी किसने ताल
सचमुच यह सुर बड़ा प्यारा है!

चाँद दूल्हा बना

आज उषा की सुन्दर लालिमा में
अपने गुलाबी तन की सुगन्ध से
ओस से नहायी हुई,
इस यौवन की फुलवारी में
कई कलियाँ इधर-उधर मदहोश हो रही हैं!

आज बगियों के कई फूल भी
इस मन्द-मन्द हवा की शहनाई में
भौंरा की तरह
अपने आप में—
खो जाने के लिए मदहोश हो रहे हैं!

कई कलियाँ अपने को
चन्द्रिका के रथ पर,
सवार होकर,
इस चाँदनी रातों में
माँग का सिन्दूर बन चमक रही हैं!

तभी तो प्रकृति—
पिया को,
अपने इस सलोने मुखड़े से—
दोनों बाँह फैलाकर आमन्त्रण दे रही है
मानो इस अद्‌भुत छटा के आँचल में
इसके लबों पर हैं छूटती फुलझड़ियाँ!

इन्द्रधनुषी बरसात

इस होली पर
मेरे मन-तरंग में
लाल, गुलाबी और हरे
जैसे तरह-तरह के
रंगों की बरसात
होने लगी है!

फिर पिया,
पास आकर
इस रंगों की होली में
मुझसे,
अठखेलियाँ
करने लगे हैं!

इस मदभरे रंगों की—
होली में,
बादल घटा बनकर
मुझ पर
इन्द्रधनुष की
बरसात करने लगी हैं!

पूनम का चाँद

तेरी सौन्दर्यश्री के
इस खुले जूड़े में
माथे का इन्द्रधनुषी कुमकुम बनकर,
आज तेरे मदभरी पायल से,
कोई सुरीला गीत बजने लगा है!

तभी तो—
मेरे नयन-नभ में
क्षितिज पार के
साँसों के तार के
कई सुरीले गीत गूँजने लगे हैं!

माना,
कि ये दिन,
प्यार के हैं,
अभिसार के हैं
फिर क्यों नहीं हम
एक नयी दुनिया में गुम हो जाएँ!

हम आईना बनकर खड़े हैं

आज
तेरा स्नेह पाकर
ममता जाग उठी है
और तेरे प्यार भरे नजरों का
हम आईना बनकर खड़े हैं!

तेरे यौवन के स्वागत में
हम बसन्त-से खिले हैं
फूट पड़े हैं नयी उमंगों में
तेरे इस मोहक मुस्कान से
हम हरसिंगार-से बार-बार सँवरे हैं!

तू खुश है तो—
चाँद-सितारे भी खुश हैं
जमीं लगती सुहानी
और आसमाँ भी लगता सुहाना
मिश्री बनकर रस घोल रहे हैं,
तेरी खुशी में हम सब कुछ लुटाते रहे हैं!

कब आएगी तू तसव्वुर की परी बनकर
सतरंगी मौसमी लाजिम मुस्कान लेकर
बोल और झरनों-सी बहेगी कब तू
सच तेरे दिल की साफगोई पर,
हम सौ-सौ बार मरे हैं!

एक सौन्दर्य-बोध

न जाने क्यों
आज तेरा चेहरा
बरबस आँखों में उतर आया है
सुधियाँ हौले-हौले-सी आती
और मेरा मन लहरों में उतर जाता है!

न जाने क्यों,
तू साँसों में, खुशबू-सी बसने को आती
और मेरा तन-मन
यौवन के इस मेले में खोकर
गन्ध अनूठी बन, महक जाता है!

न जाने क्यों
तू मेरी चाँदनी-सी लगती
जब भी धीरे-धीरे सैन चलाती
घायल होता तब-तब मन मेरा
और कोई चातक भीतर का चहक जाता है!

न जाने क्यों
इस खिले हुए चमन में
तू गुल, कोई अलग नूर का लगती
जैसे लावण्य से समर्पिता बन गयी हो
और तुझे पाने को, मेरा मन बहक जाता है!

न जाने क्यों
तू उजाड़ मौसम में
कैसे बहार बनकर आ जाती
जैसे ऊष्मा से लबरेज हो गयी हो
जिसे देख मेरा मन खिल जाता है !

दीपों की कतार

दीपों की कतार में,
इसके आलोक में,
इस चमकीले वातावरण में
शमाँ के रौनक मजहबी से
खूबसूरत दीपावली नजर आती है!

दीपों की कतार में,
आज जब—
तेरी माँग का सिन्दूर,
दीपशिखा की तरह सजने लगा,
तो तू चाँद बनी नजर आने लगी है!

तू, तेरा यह रूप
तेरा खूबसूरत जलवा—
और तेरी जुल्फ का महकता आफताब
जैसे अनेक झिलमिल दीप,
अब सुनहरी रोशनी बने नजर आते हैं!

इन्द्रधनुषी रंग

मैंने
अपने मन-मन्दिर में
एक चेहरा देखा था
जो हू-बहू तू है!

तुझे देखकर,
कानों में—
शहनाइयाँ बजती हैं
मन गुनगुनाने लगता है
जैसे कह रहा हो
जन्म-जन्म की मीत है तू!

यौवन की हरियाली में
जब तेरी पायल बजती है
तो मुहब्बत के—
इन्द्रधनुषी रंग खिल उठते हैं
जैसे तेरा सलोना चेहरा—
मेरी आँखों में,
सपना बनकर तैर गया हो!

बादल बिन बरसात

हर युग में
मैं तेरे मिलन की प्यासी रही हूँ
आज सागर के पास भी रहकर
मेरा-चेहरा उदास है क्यों ?

जबकि—
ये रूप, ये लावण्य चेहरा
किसी की प्यास में प्यासा है
कब बरसात हो,
कि हमारी प्यास बुझे !

ऐसा लगता है
मेरे मन की
सरगम के तार बजने लगे हैं
तन-बदन में शोला
भड़कने लगा है
जैसे—
बादल बिन बरसात होने लगी है !

फिर आज मेरा यौवन
महक उठा है
न जाने क्यों
रह-रहकर मेरी आँखों में
ये मौसम भी, रस घोलने लगा है !

दोहरी हो गयी है जिन्दगी

जिन्दगी के
दो पल—
साथ-साथ कैसे कटेंगे
तब मुझे शर्म आएगी
और मैं उनके सामने
अपने हाथों में चेहरा छुपा लूँगी !

लेकिन—
आज सारा वातावरण
देखते ही देखते बदल गया है
इसलिए तो आज पिया के
मिलन से—
उसका चेहरा सतरंगी हो गया है !

श्याम-सा
श्यामल चेहरा देखकर
आत्मविभोर होकर
वह गोरी,
आज खुश होकर
सचमुच, दोहरी हो गयी है !

फूलों की घाटियों में

ये शाम
महकी-महकी
इस खूबसूरत फिजा में,
जैसे तुम,
सुगन्ध बनकर,
मेरे पास आयी हो!

ये बादल
काले-काले
कजरारे नयनों वाले,
जैसे तुम—
घटा बन-बनकर
आस-पास छायी हो!

खूबसूरत
फूलों की घाटियों में
महकती-बहकती वादियों में
तुम इधर-उधर
मानो खुशबू फैलाये—
बहक रही हो!

देखता हूँ

रोज सुबह,
शबनमी मौसम में
गुलाब के फूलों में
तुम्हारा सुन्दर सलोना चेहरा
हमेशा देखा करता हूँ!

रेशम से भी कोमल
तुम्हारे हृदय की रश्मियाँ
रंग-बिरंगी खुशबूदार
झिलमिलाते फूलों के आँगन में—
हमेशा देखा करता हूँ!

कोई पास आकर
गीत गुनगुनाकर
मीठी शहद की तरह
मेरे कानों में,
रस घोल देता—
ऐसा मैं हमेशा देखा करता हूँ!

तुम खिली हुई धूप-सी

जाड़े की सुबह में
अँगड़ाई लेती हुई
नर्म-नर्म गर्माहट महसूस होती है,
तुम खिली हुई धूप लगती हो!

सुबह-सुबह
जब भी तुम मिलती हो
लगता है आस-पास
खुशबू फैल गयी हो!

हाँ, जब तुम पास नहीं होती
मैं चाँद को टकटकी लगाकर देखता हूँ
तब लगता है, चाँदनी में तुम,
हमको नहा जाती हो!

तुम,
जब सामने अँधेरा होता है
तब भीतर की रोशनी बन,
मेरी पथ-प्रदर्शक बनकर,
सफलता की राह दिखला जाती हो!

झुरमुट

नील गगन,
बादल के झुरमुट में
चलो, आओ,
आज हम दोनों छिप जाएँ!

अपनी मधुर मिलन की प्यास में
इस वसन्त भरी फगुनाहट में
तनहाई के इस आँचल में
आलिंगनबद्ध हो जाएँ!

आज हम दोनों मिलकर
एक नया सुन्दर संसार
बसाने की खातिर
एक परिवार बसाएँ!

प्रेम का दीप जलाये
हम-तुम दोनों
एक-दूसरे की
धड़कन में बस जाएँ!

फिर हंसों के जोड़े जैसे
इस संसार-सागर में तैरें

करें किलोलें—
जीवन को मुदित बनाएँ!

ऐसे बनें एक-दूजे की खातिर
कि जल और गुड़
गुड़ और जल से मिलकर,
शरबत-से बन जाएँ
बनें आदर्श औरों की खातिर
हम एक मिशाल बन जाएँ!

तेरे बगैर

तू हुश्न की मलिका है
इसलिए—
परवाने जलते नहीं हैं
तेरे बगैर!

चाँदनी रात में
संगमरमर पर—
चाँदनी छिटकती नहीं
तेरे बगैर!

दिल की प्यास
बुझती नहीं,
तेरा सुन्दर चेहरा
देखे बगैर!

इस सावन में
तू पास नहीं,
कैसे बीतेगी ये बरसात,
तेरे बगैर!

रात घिर-घिर आयी
फिर भी तुम न आयी
उफ! यह लम्बी रात कैसे ढलेगी
तेरे बगैर!

फागुनी वेला में

इस होली में
लाल-पीला-हरा
इन रंगों के संग
जैसे फगुनाहट ने
मुझे मदहोश बना दिया है !

ऐसा लगता है—
इस रंगों के मेला में
इस वातावरण ने,
मुझे इन्द्रधनुषी बना दिया है !

सागर-सी गहरी
तेरी आँखों ने
मन ही मन में
मुझे खुशगवार बना दिया है !

इस फागुनी वेला में
ये रूप-सौन्दर्य
और शोख अदा ने
जैसे मुझे भ्रमित बना दिया है !

हल्की एक बयार

आज मन थिरक-थिरककर,
खूब झूमकर इठलाने लगा है
फागुन की,
इन मस्त बयार में!

एक सुन्दर-सा सतरंगा सपना
आँखों में तैर गया है
फागुन की,
इन मस्त बयार में!

मेरे नयन लड़े जब से,
हम उनके करीब आये
फागुन की,
इन मस्त बयार में!

प्यार की रंगीन लहरें
इस दिल में फिर जागी हैं
फागुन की,
इन मस्त बयार में!

नर-नारी कृष्ण-राधा बन
भाव-विभोर होकर नाच रहे हैं
फागुन की,
इन मस्त बयार में!

कजरारी आँखें

ये कजरारी आँखें
प्यार का नशा जगाये
चितवन बन, दूर-दूर से,
जब भी पास बुलाये
तब दिल मेरा, फूलों-सा मुसकाये!

मस्ती के यौवन में
नयन घुमाकर,
सैन जब-जब चलाये
ये कजरारी आँखें,
तब हमें घायल कर जाएँ!

इन कजरारी आँखों को
रूप निहारूँ जब भी,
हमें पूरा सराबोर कर जाए
रसपान करने को आतुर
तब मेरे मन का भँवरा उड़ जाए!

ये कजरारी आँखें
कहाँ-कहाँ कब कैसे-कैसे
उड़ती-फिरती चली आएँ
एक नजर ही देख उसे,
फिदा कौन नहीं हो जाए!

सौन्दर्य में नहाया तन

ये गुलाबी-गुलाबी
उनका महका बदन,
शबनम में नहाया
या अपार सौन्दर्य में नहाया
खूबसूरत चेहरा-बदन!

घनेरी—
काली-काली लटें
कन्धों पर झूलता
आस-पास बिखर गया है
खूबसूरत चेहरा-बदन!

ये महका-महका
खूबसूरत चेहरा बदन
मानो आज कोई राहगीर के पास
आकर तू—
खूबसूरत स्वप्न-लोक में ले गयी!

सचमुच,
यौवन की इस हरियाली में
सौन्दर्य की एक प्रतिरूप खड़ी
स्वर्गीय देवकन्या बन
आज किसी से—
अदृश्य अटूट बन्धन जोड़े खड़ी है!

बजने लगी है शहनाई

इस सावन के
यौवन भरी हरियाली में
फिर से—
मन झूम उठा है
बजने लगी है शहनाई!

चाँदनी की धूप में
श्वेत संगमरमरी बनकर
जैसे तू खड़ी दीखती है
तब सपनों की बहारों में
बजने लगती है शहनाई!

पुरुष जैसे कोमल
यौवन ने,
एक-दूसरे को बाँध लिया है
तो ऐसा लगता है,
अब बजने लगी है शहनाई!

आज के मिलन से
फूल खुशबू ले, खिल उठे हैं
तब दोनों के हृदय में
कुछ कम्पन होकर—
बजने लगी है शहनाई!

तुम्हारी याद

रोज तुम्हारी याद
रह-रहकर आती
कुछ शब्द हैं,
जो अतीत के निकल पड़ते
और तुम्हारी यादें
फिर से ताजा हो जातीं!

आज भी—
तुम्हारी याद आयी,
बिछुड़े दिन की बात,
आज हृदय को सुख देकर
ख्वाब बनकर—
दिल से निकल आयी!

देखा गगन को,
फिर से—
पक्षियों में बहार आयी हो,
उनका चहचहाना सुनकर,
जैसे लगता है
तुम करीब आयी हो!

सावन के अन्धे को

सावन के अन्धे को
हर ओर
हरा ही नजर आता है,
प्रेमी–प्रेमिका को
बस एक–दूसरे के बीच
केवल प्यार ही नजर आता है!

इस समय
सामने चाहे दीवार खड़ी हो,
या ठोस जैसी चट्टान,
दोनों के बीच
यौवन का—
आकर्षण ही नजर आता है!

यही है,
यौवन के आकर्षण का
सिलसिला!
हर ओर,
चाँद को,
अपनी चाँदनी ही नजर आती है!

पूर्व से—

आज भी सिलसिला जारी है
इस प्यार के सागर में
गोरी हो या काली,
मजनूँ को हर ओर—
लैला ही नजर आती है !

चाँद छिप गया

जब-जब
चुँदरी माथे पर आयी
तब-तब
बादल की ओट में-
खूबसूरत चाँद छिप गया!

ये बालों की लट
और बालों से—
अठखेलियाँ करने का
यह सुन्दर सिलसिला,
जैसे दो प्रेमियों के
इस आहार-विहार में
प्रकृति की खिल गयी छटा!

आज
हमें इस चाँद का
रूबरू दीदार करना है
लेकिन उसे देखने के लिए
प्रेमी का मन-व्याकुल है!

क्यों कि—
इन्तजार करते-करते
खूबसूरत,
चाँद बादल में छिप गया!

दूधिया चाँदनी

तेरे जुल्फ के साये में
आज कितने दीवाने हो गये
फिर भी—
तेरे मासूम चेहरे को देखकर
इस दूधिया चाँदनी में,
मेरा जीवन, इजहारे-खयालात हो गये!

तेरे गालों की
खूबसूरत लाली को,
देखकर—
एक खूबसूरत फिजाँ बन गयी
मानो सूरज की नर्म-नर्म धूप
आज इधर-उधर फैल गयी!

आज तेरे नैनों में
सपनों का एक गाँव दीख गया
तभी तो फूलों की सुगन्ध
नशीली, मादक बनकर
आज हवा में तैर गयी,
मानो जीवन बिखरने के बदले सँवर गया!

कहते हैं—

इश्क-मुश्क और रश्क की खुशबू
छुपाये छुप नहीं सकती
इसलिए आज तेरा चेहरा
शबनम-सी बूँद बनकर,
आज निखर-निखर गया!

तेरे जुल्फ के साये में
आज कितने दीवाने हो गये
फिर भी—
तेरे मासूम चेहरे को देखकर
इस दूधिया चाँदनी में,
मेरा जीवन, इजहारे-खयालात हो गया!

देह कचनार

अप्सरा-जैसी बनी आज
केश-विन्यास कर,
मानो साँचे में ढली
ये कचनार-जैसा बदन
जैसे अपनी इस खूबसूरती को
नैसर्गिकता में बदल रहा है!

जहाँ-जहाँ तू जाती है
मोहक वातावरण बन जाता है
फिर इस लहराते हुए आँचल से
अपनी सुरभि
इधर-उधर फैलाती है
मानो आमों में
आज अमराइयों का बौर निकलने लगा है!

और—
इन खूबसूरत निगाहों में
यौवन की—
चाहत और बेकरारी
भरे आमन्त्रण में—
सब में सुन्दर छवि बनने लगी है!

स्वयंवर

दीपों से सजा है,
मेरा घर–आँगन और मन
बार–बार ये दीप
किसी की खोज में हैं
इसलिए—
आज मैं दीपों के स्वयंवर में
अकेली खड़ी हूँ,
राह तकती हुई!
न जाने मेरे मन का देवता
कब?
मुझे 'अमरदीप' बना जाएगा?

पिया बिन

तेरी
माँग की लाली
चाँदी की बाली
सोने का कँगना
फिर भी लगता है आज
पिया बिन सूना-सूना!

तेरे शबनमी रूप का,
ये दिलरुबापन,
जैसे शोख अदाओं में,
चूर लगती है।
फिर भी मन है आज तेरा
पिया बिन सूना-सूना!

चाँदी-सी उजली
हीरे की चकमक
जैसे रूप की चकोरी लगती है
फिर भी फूलों की बगिया बिन
लगता है आज,
पिया बिन सूना-सूना!

तेरी कजरारी

नयन नशीली
यह आँखों के सागर की लहरें
शान्त पड़ी दिख रही हैं
जैसे लगता है—
पिया बिन सूना-सूना!

मेरा मन

इस खूबसूरत मौसम में
नैनों में कुछ स्वप्न लिये
नीले अम्बर तले
आज दीवाना हुआ,
मेरा मन!

इस सोलह शृंगार में
ऐसी ऐश्वर्य-सौन्दर्य मूर्ति देखकर,
आज प्यार से—
भर-भर आया है
मेरा मन !

सतरंगे प्यार की फुहार में
इस प्रणय-संसार से
रूठकर—
न दूर जाना,
मेरा अस्तित्व खत्म हो जाएगा
मेरा मन!

गीतों के मौसम में
हरदम प्यार का ही गीत गाना
कभी रुसवाइयों का गीत गाकर,

पलभर को न बुलाना
मेरा मन!

क्योंकि
इन सुहावनी वादियों में
आज तन-मन सब,
खुशगवार हुआ है,
मेरा मन!

मादक क्षण

तुम परदे में छुपकर
कब तक चाँद बनी रहोगी
जरा-सा नकाब सरकाओ तो
चाँद का मुखड़ा नजर आए
क्योंकि तुम्हारे आगे सब फीका है!

ये मोहक हँसी
ये मोहक नजारे
ये प्रकृति कि सुन्दर छटाएँ
सब तुम्हारे आगे फीके हैं
फिर भी तुम परदे में, चाँद बनी फिरती हो!

इस सान्ध्यवेला की ढल रही धूप में
बाल और यौवन की
आँखमिचौली में
तुम्हारा यौवन और निखर रहा है
फिर भी तुम परदे में, चाँद बनी फिरती हो!

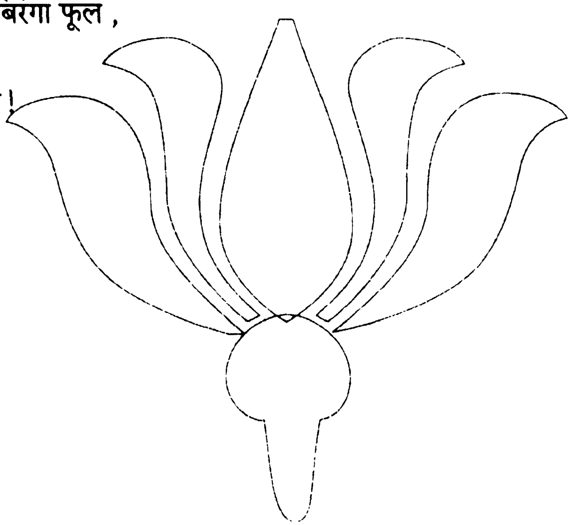
जैसे-जैसे तुम्हारे कर्णपटल से
पर्दे सरकते जाते हैं
तुम्हारे खंजर जैसे तीखे नयन

जो अपूर्व सौन्दर्य की मादकता बनकर
इत्र के समान आस-पास बिखरते जाते हैं!

इस चाँदनी रात में
सौन्दर्य कहीं कुम्हला न जाए
ऐसा डर लगता है
क्योंकि आज कोई राहगीर
तुम्हें देखकर ठिठककर रुक गया है!

जूड़े का फूल

गुलाब का फूल
नीले-पीले,
किसी सतरंगे बागों में
महकते प्रकृति के
इस संसार में
उजले चाँदी की तरह चमकीले,
खूबसूरत बर्फ के
पहाड़ों पर—
हाथ में हाथ रखे
कोई अजनबी हमसफर,
गुलाब का रंग-बिरंगा फूल ,
अपने जूड़े में
खोंसे घूम रहा है !



आज मौसम भी बौराया है

रंग–अबीर का
मौसम आया है
इसलिए मदमाती शमाँ बनकर,
सब पर मस्ती छाया है!

आज मादक नशे में
पानी भी,
रंगों में घुलकर बौराया है
जैसे मौसम आज फिर गदराया है!

कूक रही कोयल
आमों की डाली पर, मंजर आया है
मन मेरा तुमको, पाने की खातिर
फिर अब बौराया है!

फागुन के मौसम में
बुढ़वा भी मजनूँ बन जाता
इस वासन्ती वेला में,
प्यार करने को,
मेरा मन भी, ललचाया है!

तेरे चेहरे के सामने

जूही, वेला, चम्पा, चमेली
गुलाब तो दूर—
दूज का चाँद भी, आज शरमाया है!

नजरों से नजरों का मिलना
छुप-छुप कर,
घायल कर जाना,
ऐसा क्यों कर
तूने मुझको, आज तीर चुभाया है!

एक नाजुक कली

होली में नहाये
गुलाब के फूल-सा
ये मोहक अन्दाज में
लिपटी हुई ,सिमटी खड़ी है
एक नाजुक कली!

और चेहरे पर
बिखरे यौवन की मदहोशी
चितवन बन,
आज दिलवर बनी,
एक नाजुक कली!

इस होली में
हरे-पीले रंग से सराबोर होकर
सौन्दर्य भरे,
इस नाजुक कली पर,
कौन नहीं फिदा हो जाए?

बन-ठनकर राधा खड़ी है
मानो आज सौन्दर्य की मूर्ति बनी है
कृष्ण के कोमल हृदय में
बार-बार
मौन निमन्त्रण देकर,
प्यार का एहसास जगायी है!

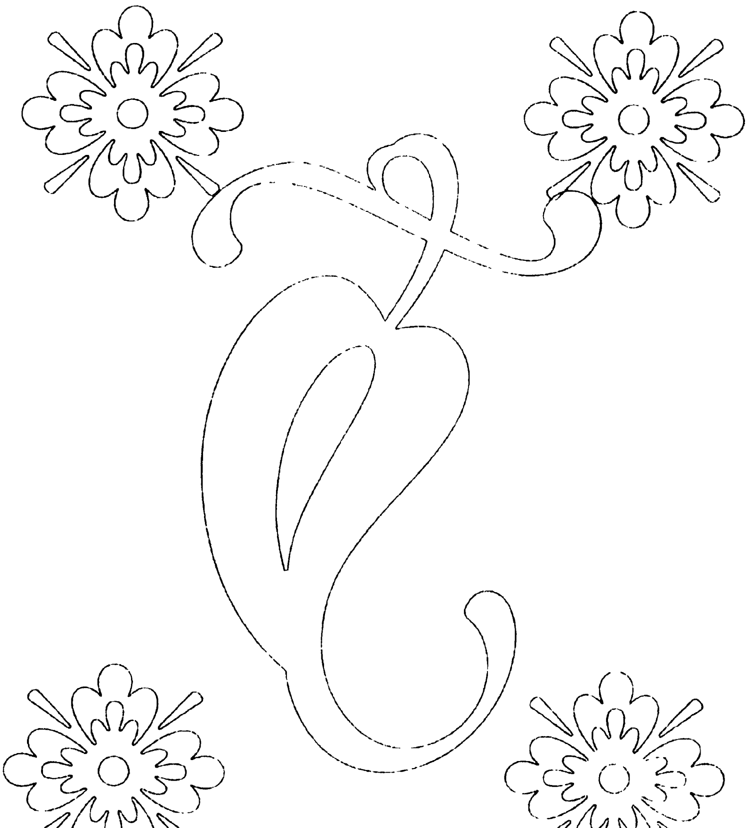
उन्मुक्त हँसी

तुम्हारी खूबसूरत,
उन्मुक्त हँसी
देखकर लगता है
जैसे नीले आकाश से
कोई उतरती हुई,
खूबसूरत श्वेत परी,
फूलों की वर्षा कर रही हो!

हरदम तुम—
ऐसे ही उन्मुक्त हँसी से,
रूप-लावण्य से सँवार,
मृग जैसी सुवासित खुशबू बन,
मेरे सपनों के कारवाँ की कस्ती,
सँवारती हुई,
साथ तुम किनारे लग रही हो!

बहारे इश्क में
जो मैंने सोचा था
वह ख्वाब मेरा सज गया है
जहाँ नशीली आँखों में
काले-काले काजल,
आज करिश्मा कर रहे हैं,

अब आकर्षण
हम दोनों के बीच—
खुशियों की लड़ियाँ बन,
आपस में जुड़ रही हैं!



सिन्दूरी पलाश

सूरज,
न जाने कहाँ खो गया है
तभी तो इस सर्द के
मौसम में,
इस बार, 'स्नोफाल' इस कदर हुआ
बर्फ से सारा शहर भींग गया है!

आज मौसम भी,
इतना खुशगवार बन गया है
जैसे बहारों की कली बन,
बर्फ के लहराते हुए समन्दर पर
हाथों में हाथ डाले—
कोई साथी प्यारा, घूम रहा है!

आज सिन्दूरी पलाश
और चिनार के दरख्त में भी,
तुम्हारा चेहरा
दर्प से खिल उठा है,
जैसे बर्फ के जंगल में,
तुम सफेद कान की बाली पहनी हो!

आज लगता ऐसा,

जैसे बर्फ के हमाम से
तुम अभी-अभी नहाकर आयी हो
तभी तो तुम्हारा सारा बदन—
बर्फ से ढँका,
श्वेत कमल बन खिल उठा है!

सजीवता की ज्योति

इस जाड़े में
सुनहरी अँजुरी भर धूप भी
मादक-मादक खुशबू फैला रही है
जैसे तेरा जीवन
मन्द-मन्द यूँ ही मुस्कुरा रहा है !

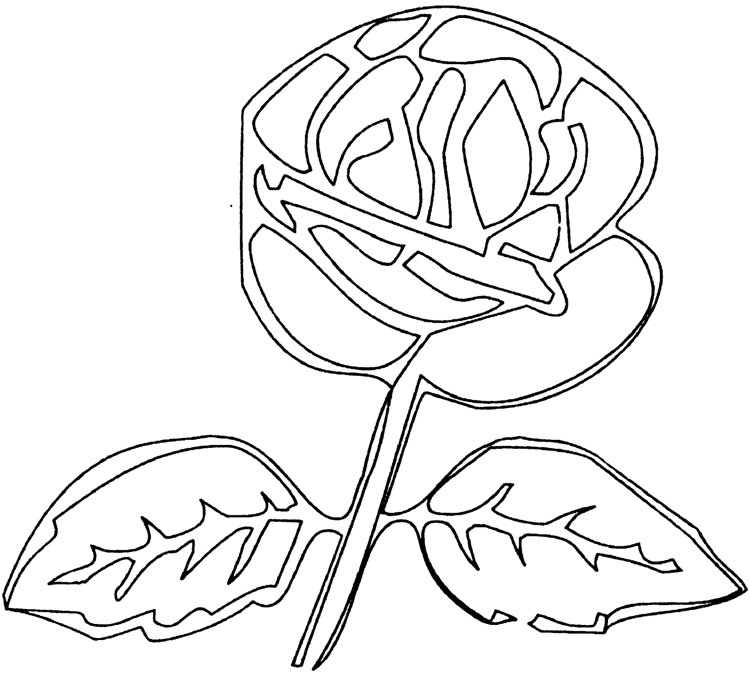
धूप की ऊष्मा से
जीव-जन्तु
पेड़-पौधे भी
इस संसार में—
सजीवता की ज्योति बन खिल रहे हैं !

ये सुनहरी धूप
कभी अपनी छटाओं में
इन्द्रधनुष बनकर
मानव-जीवन के लिए
पल-पल समर्पित हो रही है !

सुबह से शाम तक
जैसे आकाश के मैदान में
इस ऊष्मा के लबरेज से नहायी हुई
सुन्दर नयनों वाली कोई कली,

खिली-खिली देखने को मिल रही है !

इस उजाले की हर किरण
ढलकर शाम को—
इसकी उत्तराधिकारी नहीं रह जाती है
यह कैसा आश्चर्य है ?
क्या जीवन भी—
ऐसे ही अस्तित्व से प्रेरित तो नहीं ?



बगियों की रानी

नैन नशीली
चाँद चकोरी
रुत मतवाली
तू बगियों की रानी है!

रंग-बिरंगे फूलों पर
मतवाला-मँडराता,
घूमता-फिरता भौंरा
और तू बगियों की रानी है !

रूप सजा ऐसा
जैसे सोलह शृंगार कर,
कोई परी सुहानी आती,
तू बगियों की रानी है !

छैल-छबीले परवान कितने
अपने को तुझ पर मिटा देते
कुछ यों ही मरते रहते तुझ पर
तू बगियों की रानी है !

किसने बनाया तुझको
खंजन जैसे नयनों वाली,
हर राहगीर को रिझाने आती,
तू बगियों की रानी है !

आकलन

आईना
तू मेरी जिन्दगी है
सहेली, हमराज है
साथ सोती-जगती है
साथ मेरा,
सुख-दुख बाँटती है
मैं जैसे भी हूँ,
जिस हाल में हूँ
एक सच्ची सहेली की तरह
मेरी पूरी बात जानती है !

जब-जब मैं तुम्हें देखती हूँ,
ऐसा लगता है
सारा हिस्सा तुम्हारा
मेरा बन गया है
और मेरा हिस्सा तुम्हारा।

कभी मैं मुँह बनाती हूँ तो,
तुम भी उसी तरह
मुँह बिचका लेती हो
कभी मैं खाना खाती हूँ
तुम भी, स्वाद ले- लेकर खाती हो !

मैं सुबह जगती
तुम भी जग जाती हो
अगर मैं सो जाती
तुम भी सो जाती हो।

सुबह मैं भगवान का स्मरण करती
देखती, तुम भी प्रार्थना कर रही हो
जैसे तुम मेरी एक्सरे मशीन हो।
सचमुच तुम मेरी जिन्दगी, सहेली·और हमराज हो
नहीं तो इस मशीनी युग में,
किसको पड़ी है, किसी की बात सुनने-समझने की?

सन्देश एकता का

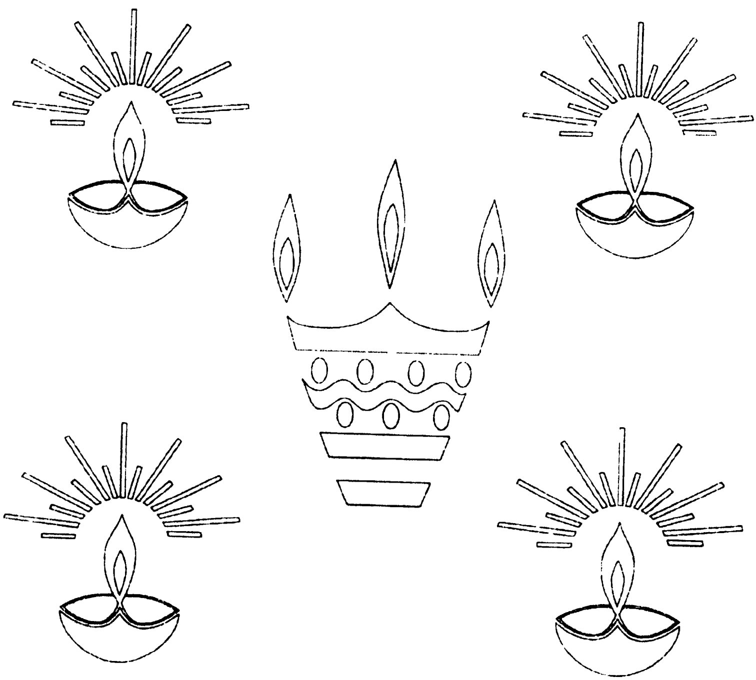
दीपावली
एक नाम है शान्ति का
जो घर-घर,
और देश-देश
अपनी शान्ति का प्रचार करती है
तभी तो साथ जलकर
एकता का सन्देश देती है !

सन्देश एकता का
आज किसे प्यारा नहीं ?
यही कारण है—
इन दीपों को,
देश-विदेश
सबने स्वीकारा है !

कल जब राम के आने पर
अयोध्या में दीप जले थे
इसीलिए तो—
आज—
यह घर-घर जलती है !

फिर एक दिन

इस दीप के आलोक में
बुद्ध ने कहा था—
'अप्प दीवो भव'
इसलिए—
आज हर मानव के
दूर होते गम, इनमें दीखते हैं !



मैंने भी फागुन का गीत गाया

आज गाँव-गाँव
धूम मची है,
फागुन आया
फागुन आया
खेत-खलिहान में
फूली-सरसों
लोगों ने जैसे नया जीवन पाया !

लोगों ने
धरती से अम्बर तक
इस फागुनी वेला में
ढोल-पीट-पीटकर
खूब उत्साहित होकर
सभी ने फाग का सुन्दर गीत गाया,
लोगों ने जैसे नया जीवन पाया !

नभतल पर,
रंगों की वर्षा
आज होने वाली है
सराबार हाकर
मदहोश होकर,
झूम-झूम कर,
लोगों ने आज फाग का गीत गाया !

लाल-पीले और हरे से
इन्द्रधनुषी रंग बनाकर
सदियों से आज तक
रंगों की रानी होली ने,
सभी को—
मानव-मानव से प्रेम करो
ऐसा-'भाई-चारा' का सन्देश सुनाया !

यह चेहरा किसका है

फूलों की सेज सजी, इठलाती बलखाती,
झीलवाली आँखों-सी, जीवन की सरिता सी !

नवल-धवल चन्दा-सी,लहराती बलखाती
बादल की डोली में, चेहरा यह किसका है!

यौवन की मदिरा-सी, मदमाती नयन लिये,
कोकिल की बोली-सी, मधुर-मधुर बोल लिये!

सोलह श्रृंगार सजी, मधुमय इस वेला में
बादल की डोली में, चेहरा यह किसका है!

फूलों की बगिया में, चिड़ियों की चहचह-सी
घुँघरू की बोलों में, पायल की छमछम में!

मन्द-मन्द मधुर-मधुर, मुस्काती हौले-सी,
बादल की डोली में, चेहरा यह किसका है!

साड़ी

उस दिन
दूकानदार से,
साड़ी खरीदते वक्त
एक महिला बोली—
आप इस साड़ी के
रंग की गारण्टी दे रहे हैं।
लेकिन—
इसकी कीमत सुनकर,
मेरे पति के चेहरे का रंग-
नहीं उड़ेगा,
इसकी भी तो गारण्टी दें!

सहेली

सुप्रिया ने—
अपनी सहेली से पूछकर—
जो हिन्दी की प्रोफेसर है,
अपने पुत्र का नाम—
ऋषिकेश और गुडाकेश रखा
जिसका अर्थ होता है श्रीकृष्ण !

पुनः जब उसे तीसरा भी पुत्र प्राप्त हुआ
नामकरण के लिए,
वह सहेली के पास पुनः आकर बोली—
पूर्व के अनुसार ही,
एक मिलता-जुलता नाम बताओ !
यह सुनकर उसकी सहेली ने कहा—
बड़ी मुश्किल है,
एक मिलता-जुलता नाम और खोजना।

फिर थोड़ी देर के बाद ही,
वह धीरे से मुस्कुरा कर बोली—
पहले का नाम ऋषिकेश,
दूसरे का नाम गुडाकेश रखा
तो तीसरे का नाम सूटकेश रख लो !

चली आज घर की बेटी चली

चली आज घर की बेटी चली
चली आज घर की बेटी चली
कल तक जो इस आँगन में
इधर-उधर चहकती थी कली
चली आज घर की बेटी चली

जा मेरी लाडली मेरी दुआएँ लेती जा
मेरा विश्वास है,
यहाँ जैसा ममता-प्यार वहाँ भी मिलेगा
बाबुल ने भर दी है, चाँद सितारों से गोदी
हरदम रंहेगा, तेरे कदमों में सुख का मोती

इस घर का बाबुल
आज जार-जार रोये—
अब वह जिएगा किसके सहारे
घर की लक्ष्मी तो, आज चली परदेश
फिर न जाने कब आएगी बाबुल के देश

सावन के दिन आये तो
भाई को राखी बाँध जाना
बाबुल के पास आकर, गले मिल जाना
ऐसा सुन्दर सपना देखने के लिए—
आँखों में हैं, न जाने आज कितने मोती ?

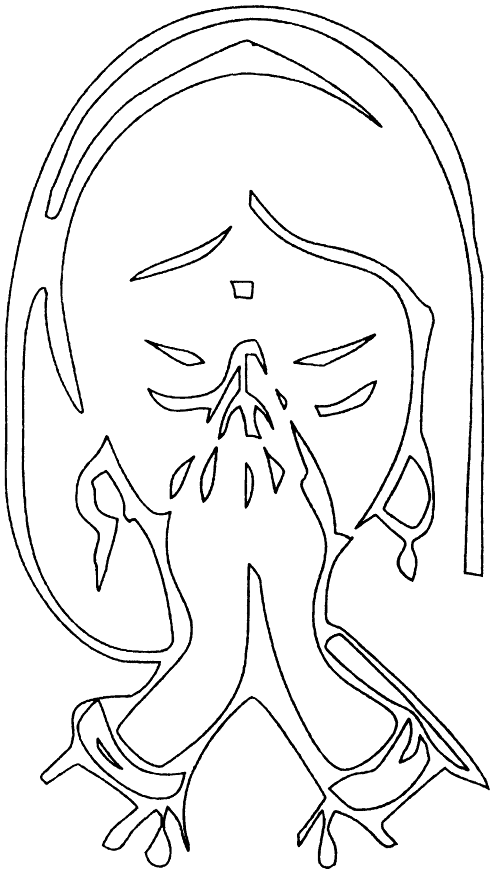
नारी माँ होती है

नारी माँ होती है
वह पूरे परिवार को
अपने हाथों से सींचने के लिए
चावल बीनती
आटा पीसती
चौका-बर्तन कर,
अपने भूखे परिवार को
सुरुचि भोजन बनाकर खिलाती है!

स्नेह-ममता भरी माँ,
घर को खुशहाल बनाने के लिए
वह खुद पिसाती है
स्वयं दर्द सहकर
अपने में गम खाकर
अपने को लाख जतन कर,
बहुत तमन्नाओं से—
ओठों पर मुस्कुराहट रखकर,
पूरे परिवार को खुश रखती है!

माँ की निष्ठा ही है
जो एक बच्चे को
दुलराती-पुचकारती-सँवारती,

उसकी परवरिश करती है।
उज्ज्वल भविष्य के बारे सोचकर,
अपना सारा जीवन
उसमें लगा देती है
वही उसकी नियति है
जो अपने बच्चे को,
एक काबिल इन्सान बनाती है!



नारी तुम शतरूपा हो

नारी तुम शतरूपा हो
तुम लावण्यमयी, तुम समर्पिता
तुम ममता की मूरत,
सुख का आँचल हो !

केवल परिवार नहीं
समाज नहीं
तुम राष्ट्र-विधात्री जननी हो
गोदी में शिशु मचलते
तुम सचमुच जग की जननी हो !

कहीं दुर्गा, कहीं काली,
कहीं लक्ष्मी, कहीं शारदा
तुम स्रष्टा की अद्‌भुत सृजा हो !

कहीं मैया
कहीं बहना
कहीं भार्या
कहीं कन्या
तुम तो विविध स्वरूपा हो !

अपना हित सोचा नहीं
जिया जीवन सबकी खातिर
युग-निर्माण करने वाली
तुम सचमुच कल्याणी हो !

धरती माँ महान् होती है

पाकिस्तान की
गलत हरकतों के कारण—
कारगिल के शहादत पर
कई नौजवान शहीद हो गये
जब यह खबर,
उसकी माँ ने सुनी तो—
उनका हृदय रोया नहीं,
न ही, कतरा-कतरा कर पिघला !

बल्कि—
साहस और वीरतापूर्वक गर्व से कहा-
एक ही बेटा था,
कई होते तो—
मैं मातृभूमि के लिए
उसे भी कुर्बान कर देती !

सच ही तो है,
धरती माँ—
स्वर्ग से भी महान् होती है !
इसलिए
अब उठो जवानो
अपनी धधकती-सुलगती भुजाओं में
फिर से जोश भर लो,
अपने देश कि बलिवेदी के लिए,
भारत माँ तुम्हें बुला रही है !

इन्तजार

कल तक वह—
इधर-उधर,
आकाश-धरती पर,
स्वच्छन्द विचरण करती थी!
उस समय उसे,
फूल-पत्ती,
पहाड़ एवं प्रकृति से प्यार था !
लेकिन—
जब से वह सिन्दूरी हुई,
तब से वह,
घर की लक्ष्मण-रेखा से बँध गयी
अब उसे इन्तजार से,
इन दिनों प्यार हो गया !
अब इसके दिन
यों ही गुजर जाते हैं
रात होने के इन्तजार में !
पतझर जब आते हैं,
तब इसे सावन का,
बेकरारी से इन्तजार रहता है !
लगता है इसके जीवन में—
'इन्तजार' एक तारतम्य बन गया है
तभी तो शाम होते ही
वह देहरी पर खड़ी मिलती है
अपने 'पिया-मिलन' के इन्तजार में !

औरत क्षमामयी है

औरत
संवेदनशीलता और
स्नेह की मूर्ति है!
जो अपने स्वभाववश
उदार होकर,
अपने प्यार के करुणासिक्त
पुष्पों की—
अपने पुरुष(पति)
पर वर्षा करती है!
अगर वह,
कीचड़ (दुख)में गिर जाता है
तो वह औरत ममतामयी
बनकर,
उसका उद्धार करती है!
फिर भी—
प्रतिवर्ष
वह दहेज की बलिवेदी पर
इन्हीं पुरुषों द्वारा—
अपने जीवन की
तिलांजलि देती है!

अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस

एक दिन मैं बस से
अपने घर जा रहा था।
भीड़ थी—
मैंने अपने सर को नीचे कर,
उस भीड़ में घुसने का प्रयास किया।
तभी किसी महिला ने,
मुझे टोकते हुए कहा—
थोड़ा भी 'मैनर' नहीं है
महिला खड़ी है और—
आप घुसे जा रहे हैं
हम दोनों में चिकचिक होने लगी
तभी मैंने तनकर कहा—
महाशया,
आप अगर महिला हैं
तो मैं भी एक विकलांग हूँ!
यह सुनकर तीसरे यात्री ने कहा—
अरे भइया, हर जगह 'लेडीज फर्स्ट' होता है
तो फिर यहाँ भी इन्हें मौका दे दो!
तभी चौथे यात्री ने धीरे से कहा-
अरे भइया,
आज 'अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस' है
इस बहाने भी तो चुप हो जाओ!

जिन्दगी के रौद्र रूप

नारी,
जिन्दगी के
तीन रूपों में मैंने तुझे देखा,
रंग-बिरंगे
आँचल से लिपटी जिन्दा नारी
एक समय के झरोखे में
आँखों में आँसू लिये नारी
दूसरी बार, समय को पहचानकर
दानवीर कर्ण की भूमिका वाली नारी
और तीसरी बार, समय की चमकीली
परिस्थितियों के बीच,
दुर्गा के रौद्र रूप,
के धरातल पर,
रोती-हँसती-जीती हुई नारी!

पुरुष का घर

एक औरत, पुरुष का घर होती है
और उसके बच्चे,
उपवन होते हैं!
यही नहीं—
वह इन पुरुषों की
माँ–बहन–बेटी बनकर
वात्सल्य, ममता और स्नेह का आँचल होती है!

फिर घर जहाँ होता है
राहगीर वहीं रुक जाता है
इस उपवन के सुख में
वह स्वयं को गुम कर,
सारी दुनिया को भूलकर,
सुख–शान्ति से—
इस घर में खो जाता है!

फिर भी—
वह प्रतिदिन इस औरत को,
मारता है
दुत्कारता है
ठुकराता है
उसे दहेज की बलिवेदी पर जलाता है।

आखिर इस पुरुष का, यह कैसा घर है!

पुरुष सुख-शान्ति के बदले
अपने घर को ही
अशान्त और चीत्कार का
भयंकर दृश्य बना देता है
जहाँ वह रहता है
उसी घर में सेंध लगाता है
आखिर इस पुरुष का यह कैसा घर है!

इतना होने पर भी
औरत खुलकर सिसकती नहीं,
रोती नहीं,
सिर्फ मन ही मन,
अपने आँसुओं को पोंछकर
वह इस पुरुष को क्षमा कर,
प्रतिवर्ष अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस मना लेती है!

वह प्रार्थना करती है

माँ पीड़ित है
बहन पीड़ित है
समाज और देश में
बलात्कार की मानसिकता से,
यहाँ हर औरत पीड़ित है!

न जाने कब,
और कैसे—
इस क्रूर समस्या से
इस कुरूप मानसिकता से
औरत वर्ग की सुरक्षा होगी!

इसलिए-
वह आज चौकन्नी निगाहों से,
डरी-डरी हुई,
सदा घूरती रहती है, कपड़े पहने हुए,
इन नंगे मर्दों को!

क्योंकि—
यहाँ जो रक्षक होते हैं
वे अन्दर से काले होते हैं
अवसर मिलने पर—

भक्षक बन जाते हैं

इसलिए
वह हरदम
अपनी सुरक्षा के लिए—
मन ही मन,
भगवान से प्रार्थना करती है!

सचमुच आज,
माँ पीड़ित है
बहन पीड़ित है
समाज और देश में
बलात्कार की मानसिकता से
यहाँ हर औरत पीड़ित है!

जिन्दगी से

मेरी जिन्दगी से
रूठकर—
सारी खुशियाँ चली गयीं
जिन्दगी अन्धकार हो गयीं
यानि तुम दूर चली गयीं!

तब से मेरा सूरज भी
गम में घुलकर
तारों में बिखर गया है
अब सारा जहाँ अन्धकार हो गया
यानि तुम दूर चली गयीं!

अब मेरे गमों के तारों से
रोशनी भी,
अन्धकार में बदल गयी है
जैसे मेरा जीवन
बीच मझधार में
डूब गया है
यानि तुम दूर चली गयीं!

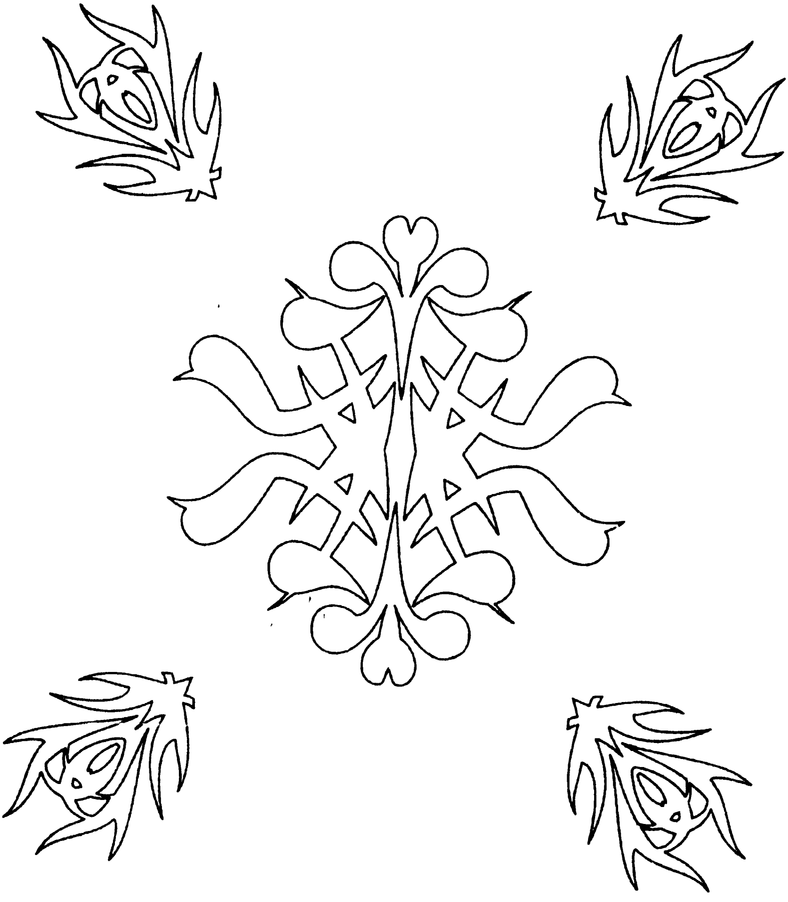
कोई हमसफर होता

काश! कोई हमसफर होता
जिसके साथ
हाथों में हाथ डाले घूमता
इतराता, इठलाता,
उसका अविस्मरणीय सौन्दर्य देखकर
अपने को गर्व महसूस करता!

ऐसा होता तो—
कभी चाँद को न देखता
क्योंकि वह सपनों की
मलिका बन,
यौवन की खिलखिलाती खुशबू,
बिखराती उसके केश-विन्यास,
जो मेरे चंचल चितवन को
देखने से सकून मिलती!

यही नहीं—
उसका अनिन्द्य सौन्दर्य
रह-रहकर,
मेरे मानस-पटल पर,
स्वर्गीय आनन्द देता रहता
जिसमें मैं हमेशा के लिए गुम हो जाता!

सचमुच, कोई हमसफर होता
जिसके साथ,
हाथों में हाथ डाले घूमता
इतराता-इठलाता,
उसका अविस्मरणीय सौन्दर्य देखकर,
अपने को गर्व महसूस करता!



सूरज ढलता चला जाएगा

रूप सौन्दर्य की मलिका
तुम आओ न आओ
पास मेरे प्रिये
यह सूरज तो ढलता चला जाएगा!

धूप देकर तुझे—
अपनी किरणों से,
खिलखिलाया सदा
पर, अब यह कहीं, दूर चला जाएगा!

तुम छलको न छलको,
प्यार में कभी—
पर, छलक कर,
आज तुझे यह नहा जाएगा!

रूप सौन्दर्य की मलिका—
तुम आओ न आओ
पास मेरे प्रिये
यह सूरज तो ढलता चला जाएगा!

धार के पार करने को
इन्द्रधनुष की बरसात देख
तुझमें आशा जगा
यह आज तुमको किनारा दिखा जाएगा!

रंग और पिचकारी

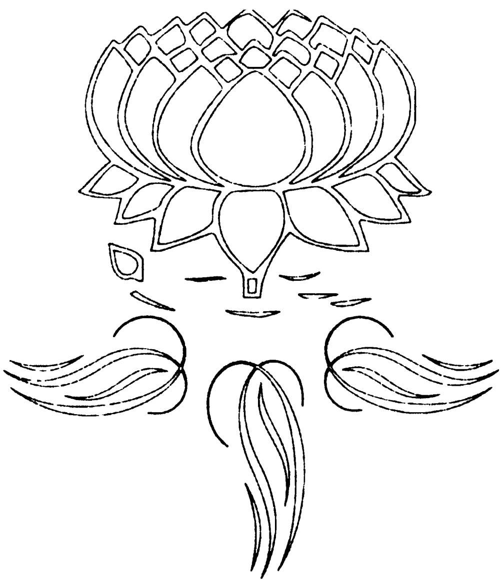
भारत वर्ष
साधु-सन्तों का देश रहा है
वह किसी को शाप दे देता
अहल्या पत्थर बन जाती
शकुन्तला अपने दुष्यन्त से दूर हो जाती !

किन्तु अब यह देश,
नेताओं का बन गया है
साधु-सन्तों की आत्मा,
अब इन्हीं कर्णधारों में बसने लगी है!

इसलिए,
ये कुछ भी अपने भाषण में कहते
उसका परिणाम उल्टा होता
जैसे किसी नेता ने कहा—
गरीबी हटाओ
गरीब मर गये।
इस देश को शिक्षित करना है
अशिक्षितों की संख्या बढ़ गयी।
देश को सुदृढ़ करना है
लोग धर्म-कर्म के बीच,
अपने को पाटने लगे!

कल कोयले की कीमत कम थी
आज आसमान चढ़कर बोलने लगी है!

इसलिए
कवि सूरज मृदुल—
इस बार की होली में
इन नेताओं से निवेदन करता है
रंग और पिचकारी पर,
अपना भाषण न देना
नहीं तो—
इसकी कीमत बढ़ जाएगी
यह भी बाजार से गुम हो जाएगी
तब इस देश की पारम्परिक 'होली'
रसहीन और रंगहीन हो जाएगी!



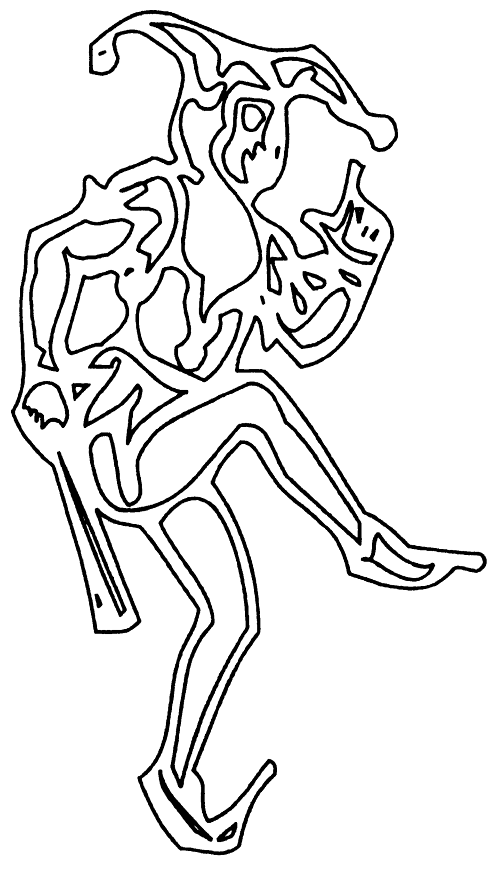
जोकर

आज का आदमी
एक जोकर बन गया है
समय के आँचल में—
वह अपने गम, दुख और आँसू को,
अपने सीने में छुपाकर
दोहरी जिन्दगी जीकर,
दूसरे के सामने सदा मुस्कुराता रहता है!

नेता को,
अपने खाने-पीने की चिन्ता नहीं होती
क्यों कि देश की हजारों समस्याएँ सामने होती हैं!
जनता के सामने
सब समस्याओं को—
उसे मुस्कुराकर,सुलझाना होता है
तभी तो वह है,
एक अच्छा नेता कहलाता!

मीलों चलकर
धूल फाँकते हुए,
वह जब ऑफिस आता
फाइल के बोझ तले दबता रहता
तभी तो वह एकअच्छा 'स्टाफ' कहलाता!

जब वह घर आता
तब सोचता—
थोड़ी देर मैं राहत की साँस ले लूँ
तभी नयी-नवेली पत्नी कहती—
चलो, आज यौवन की इस हरियाली में,
हम किसी होटल में 'डिनर' लेंगे
प्यार-मोहब्बत की बातें करेंगे
किसी थियेटर में 'गोविन्दा' की फिल्म देखेंगे!
वह अवाक् होकर,उसके साथ बाजार निकल पड़ता!!



सूरज

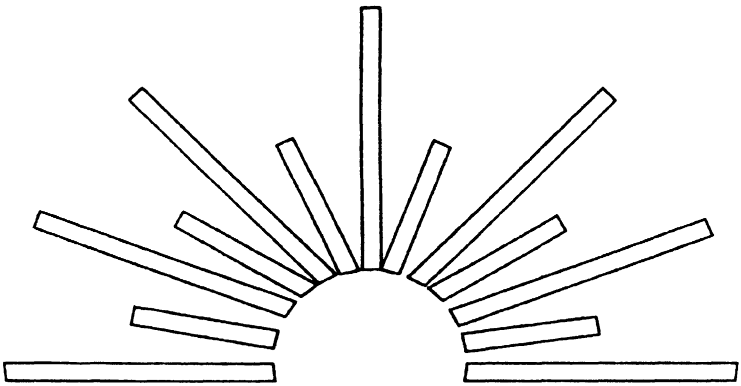
मैं जीवन का
एक ढलता सूरज हूँ
जिसका अब कोई न किनारा
न कोई क्षितिज है
जैसे अब लगता है
बेदिली होकर,
यहाँ से कूच करना होगा!

यौवन की तलहटी पर
जब तू प्यार की खुशबू फैलाती थी
तब मुझे क्या मालूम
जो आज मेरे जीवन में
ताजे जुहू की खुशबू फैला रही है
वह जल्द ही
एक दिन टूटकर बिखर जाएगा।

कल तक
मुहब्बत थी
तो जीने से मुरव्वत थी
हर फूलों की डाली पर बैठकर
मैं भँवरा बन,
फूलों की घाटियों में

अपना खुशबू फैलाता था!

लेकिन
आज मेरे जीवन का तीन हिस्सा
प्रकृति ने
अपनी गोद में लील लिया तो—
पर्दानशीन भी,
अब खिड़कियों में बन्द होकर रहने लगी हैं
जैसे खूबसूरत फूलों वाली घाटी में
इन दिनों कलियों का खिलना बन्द हो गया है!



विचारधारा

आज मानव की मानवीय विचारधारा
कितनी जर्जर हो गयी है
जो समाज को—
एक अच्छा विचार दे रहा है,
वही समाज
तस्लीमा-नसरीन और रुशदी का
हर जगह शोषण कर रहा है !

कल हम अनपढ़ थे, अज्ञानी थे,
लेकिन—
आज मानव अपनी सफलता के कारण
अणु-युग, नाभिकीय युग और अन्तरिक्ष युग में
प्रवेश कर गया है !

फिर भी
इस उत्कृष्ट मानव का
आज अवमूल्यन हो रहा है !
आज क्यों मानव,
मानव के विरोध में
संकीर्णता, साम्प्रदायिकता की हवा को,
प्रदर्शित कर रहा है ?

जबकि—
हर मानव का जन्म हुआ,
दूसरे मानव की भलाई के लिए
दुनिया की किसी भी जाति का,
मात्र एक मजहब है
मानव-मानव से प्रेम करना,
मानव के जीने का लक्ष्य भी इसी में निहित है!

फिर भी—
आज मानव-मानव का शोषण कर रहा है
सच, आज मानव की मानवीय विचारधारा
कितनी जर्जर हो गयी है!

विश्वास

आज आदमी,
आदमी पर विश्वास नहीं करता
कल तक, वह मकान—
खुला छोड़ चल देता था
लेकिन—
आज उसे विश्वास है
एक निर्जीव ताले पर,
जो कभी भी टूट सकता है!

आज आदमी
कितना सभ्य हो चुका है, अपने आप में?
इसका प्रमाण है—
पाश्चात्य सभ्यता की,
वह नकल कर,
अपने देश की सभ्यता में है सेंध लगा रहा!

कल आदमी को विश्वास था
तब आदमी,
आदमी से प्रेम था,
श्रद्धा और निश्चल प्यार था
एक भाईचारा का सम्बन्ध था
लेकिन—

आज हत्यारा और खूनी जैसा सम्बन्ध है!

क्या आज आदमी,
एक पशु से भी छोटा हो गया है?
क्योंकि उसे मानव जाति के बीच
प्रेम की ज्योति का अलख जगाना था!
यह देख
क्या नहीं लगता
आज का सभ्य मानव,
कल के असभ्य मानव से भी छोटा हो गया है?

आज वह कहता है—
मैं जमीन से उठकर, आसमाँ पर हूँ,
लेकिन वह आज जमीन को ही भूल गया है
फिर वह आसमाँ की खाक कद्र करेगा?
जहाँ अपनी माँ, बहन, बेटी को—
मानव सरेआम नंगा कर रहा है,
अगर यही उन्नति है
तो उसे चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिए!

पत्थर का बुत

आज वह विधवा हो गयी
माँग का सिन्दूर
उसने सदा के लिए धो दिया
कल जब वह साथ था
मधुमास के दिनों में
जीवन मस्तीभरा रंगीन था
तुझे देख प्रियतम
चाँद-सितारों से तुलना करता
तुझे कभी अंकशायिनी बनाकर
अपने को गौरवान्वित महसूस करता!
लेकिन आज तू विधवा हो गयी
तेरी माँग का सिन्दूर
हाथों की चूड़ियाँ
टूटकर बिखर गयीं,
सजने-सँवरने के दिन भी बीत गये
अब सारा जहाँ रसहीन-रंगहीन बन गया है!
शरीर में प्राण होते हुए भी,
तू एक पत्थर का बुत बन गयी है,
क्योंकि तुम्हारा पति—
सूनी माँग छोड़कर चला गया है!
सिर्फ दे गया है एक अतीत
जो तुम्हें रह-रहकर, आज रुलाता है!



जन्म स्थान : पटना (बिहार)

शिक्षा : बी.कॉम, एल.-एल.बी., एम.बी.ए., पी.-एच.डी.।

सम्प्रति : स्वतन्त्र पत्रकारिता एवं लेखन।

कृतियाँ : कविताजंलि, बैसाखियों के सहारे, एक टुकड़ा सुख, रंग-व्यंग्य-तरंग, स्वास्थ्य दर्शन, कहानी के करीब, औरत है महान, द्रवीभूत होते क्षण, फतेहपुर वाली भाभी।

बाल-कृतियाँ : कथा अमर शहीदों की, पुरस्कार, मनोरंजक कहानियाँ, सचित्र बाल कहानियाँ, सचित्र बाल कविताएँ।

सम्पादन : पान-पत्रिका,
नालन्दा दर्पण -पत्रिका
ललित छाया -पत्रिका।

सम्पर्क-सूत्र . डॉ. सूरज मृदुल
गुरुद्वारा के सामने, रमना,
मुजफ्फरपुर (बिहार)भारत।